قرآن مجید

लफ़्ज़ी तरजुमा

وَالمُحصَنتُ

पारा - 5

ePara h

كِتٰبَ	اَيْمَانُكُمْ ج	مَلَكَتْ	مَا	اِلَّا	مِنَ النِّسَآءِ	وَّالْمُحْصَنٰتُ
लिखा हुआ है	दाएें हाथ तुम्हारे	मालिक हुए	जिनके	मगर	औरतों में से	और वो जो शादी शुदा हैं

تَبْتَغُوْا	اَنْ	ذٰلِكُمْ	وَرَآءَ	مَّا	لَكُمْ	وَاُحِلَّ	عَلَيْكُمْ ج	اللّٰهِ
तुम तलाश करो	कि	उनके	इलावा है	वो जो	तुम्हारे लिए	और हलाल किया गया है	तुम पर	अल्लाह का

اسْتَمْتَعْتُمْ	فَمَا	مُسٰفِحِيْنَ ط	غَيْرَ	مُّحْصِنِيْنَ	بِاَمْوَالِكُمْ
फ़ायदा उठाया तुमने	तो जो	बदकारी करने वाले	ना कि	निकाह में लाने वाले हो	साथ अपने मालों के

جُنَاحَ	وَلَا	فَرِيْضَةً ط	اُجُوْرَهُنَّ	فَاٰتُوْهُنَّ	مِنْهُنَّ	بِهٖ
कोई गुनाह	और नहीं	मुक़र्रर किए हुए	महर उनके	तो दे दो उन्हें	उनसे	साथ उस (निकाह) के

اللّٰهَ	اِنَّ	الْفَرِيْضَةِ ط	مِنْ بَعْدِ	بِهٖ	تَرٰضَيْتُمْ	فِيْمَا	عَلَيْكُمْ
अल्लाह	बेशक	महर (मुक़र्रर) करने के	बाद	जिस पर	तुम बाहम राज़ी हो जाओ	उसमें जो	तुम पर

طَوْلًا	مِنْكُمْ	يَسْتَطِعْ	لَّمْ	وَمَنْ	حَكِيْمًا (24)	عَلِيْمًا	كَانَ
वुसअत/माल की	तुम में से	इस्तिताअत रखे	ना	और जो कोई	बहुत हिक्मत वाला	बहुत इल्म वाला	है

اَيْمَانُكُمْ	مَلَكَتْ	فَمِنْ مَّا	الْمُؤْمِنٰتِ	الْمُحْصَنٰتِ	يَّنْكِحَ	اَنْ
दाएें हाथ तुम्हारे	मालिक हुए	तो उनसे जिनके	जो मोमिना हों	आज़ाद औरतों से	वो निकाह करे	कि

بَعْضُكُمْ	بِاِيْمَانِكُمْ ط	اَعْلَمُ	وَاللّٰهُ	الْمُؤْمِنٰتِ ط	مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
बाज़ तुम्हारे	तुम्हारे ईमान को	ज़्यादा जानता है	और अल्लाह	जो मोमिना हों	तुम्हारी लौंडियों में से

اُجُوْرَهُنَّ	وَاٰتُوْهُنَّ	اَهْلِهِنَّ	بِاِذْنِ	فَانْكِحُوْهُنَّ	مِّنْ بَعْضٍ ج
महर उनके	और दो उन्हें	उनके मालिकों की	इजाज़त से	तो निकाह कर लो उनसे	बाज़ से हैं

اَخْدَانٍ ج	مُتَّخِذٰتِ	وَّلَا	مُسٰفِحٰتٍ	غَيْرَ	مُحْصَنٰتٍ	بِالْمَعْرُوْفِ
छुपे दोस्त	बनाने वालियां	और ना	बदकारी करने वालियां	ना	निकाह में महफ़ूज़ होने वालियां	मारूफ़ तरीक़े से

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نِصْفُ	فَعَلَيْهِنَّ	بِفَاحِشَةٍ	اَتَيْنَ	فَاِنْ	اُحْصِنَّ	فَاِذَآ
आधी	तो उन पर है	किसी बेहयाई को	वो आएं	फिर अगर	वो निकाह में लाई जाएं	तो जब

خَشِيَ	لِمَنْ	ذٰلِكَ	مِنَ الْعَذَابِ ط	عَلَى الْمُحْصَنٰتِ	مَا
डरे	उसके लिए है जो	ये	सज़ा में से	पाक दामन औरतों पर है	वो जो

غَفُوْرٌ	وَاللّٰهُ	لَّكُمْ ط	خَيْرٌ	تَصْبِرُوْا	وَاَنْ	مِنْكُمْ ط	الْعَنَتَ
बहुत बख़्शने वाला है	और अल्लाह	तुम्हारे लिए	बेहतर है	तुम सब्र करो	और ये कि	तुम में से	गुनाह से

ع 4 3 1

سُنَنَ	وَيَهْدِيَكُمْ	لَكُمْ	لِيُبَيِّنَ	اللّٰهُ	يُرِيْدُ	رَّحِيْمٌ (25) ع
तरीक़ों की	और वो हिदायत दे तुम्हें	तुम्हारे लिए	कि वो वाज़ेह करदे	अल्लाह	चाहता है	निहायत रहम करने वाला है

حَكِيْمٌ (26)	عَلِيْمٌ	وَاللّٰهُ	عَلَيْكُمْ ط	وَيَتُوْبَ	مِنْ قَبْلِكُمْ	الَّذِيْنَ
बहुत हिक्मत वाला है	बहुत इल्म वाला है	और अल्लाह	तुम पर	और वो मेहरबान हो	तुमसे पहले थे	उन लोगों के जो

الَّذِيْنَ	وَيُرِيْدُ	عَلَيْكُمْ قف	يَّتُوْبَ	اَنْ	يُرِيْدُ	وَاللّٰهُ
वो जो	और चाहते हैं	तुम पर	वो मेहरबान हो	कि	चाहता है	और अल्लाह

يُرِيْدُ	عَظِيْمًا (27)	مَيْلًا	تَمِيْلُوْا	اَنْ	الشَّهَوٰتِ	يَتَّبِعُوْنَ
चाहता है	बहुत बड़ा	झुक जाना	तुम झुक जाओ	कि	ख़्वाहिशात की	पैरवी करते हैं

ضَعِيْفًا (28)	الْاِنْسَانُ	وَخُلِقَ	عَنْكُمْ ج	يُّخَفِّفَ	اَنْ	اللّٰهُ
कमज़ोर	इंसान	और पैदा किया गया है	तुमसे	वो हल्का कर दे	कि	अल्लाह

اِلَّآ	بِالْبَاطِلِ	بَيْنَكُمْ	اَمْوَالَكُمْ	لَا تَاْكُلُوْٓا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ
मगर	बातिल तरीक़े से	आपस में	अपने मालों को	ना तुम खाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

تَقْتُلُوْٓا	وَلَا	مِّنْكُمْ قف	عَنْ تَرَاضٍ	تِجَارَةً	تَكُوْنَ	اَنْ
तुम क़त्ल करो	और ना	तुम्हारी	बाहमी रज़ामंदी से	तिजारत	हो	ये कि

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْفُسَكُمْ ط	إِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِكُمْ	رَحِيْمًا (29)	وَمَنْ	يَّفْعَلْ
अपने नफ़्सों को	बेशक	अल्लाह	है	तुम पर	निहायत रहम करने वाला	और जो कोई	करेगा

ذٰلِكَ	عُدْوَانًا	وَّظُلْمًا	فَسَوْفَ	نُصْلِيْهِ	نَارًا ط	وَكَانَ	ذٰلِكَ
ये	ज़्यादती	और ज़ुल्म से	पस अनक़रीब	हम जलाऐंगे उसे	आग में	और है	ये

عَلَى اللّٰهِ	يَسِيْرًا (30)	إِنْ	تَجْتَنِبُوْا	كَبَآئِرَ	مَا	تُنْهَوْنَ	عَنْهُ
अल्लाह पर	निहायत आसान	अगर	तुम इज्तिनाब करो/बचो	बड़े गुनाहों से	वो जो	तुम रोके जाते हो	जिनसे

نُكَفِّرْ	عَنْكُمْ	سَيِّاٰتِكُمْ	وَنُدْخِلْكُمْ	مُّدْخَلًا	كَرِيْمًا (31)	وَلَا
हम दूर कर देंगे	तुमसे	बुराईयां तुम्हारी	और हम दाख़िल करेंगे तुम्हें	दाख़िल करना	इज़्ज़त से	और ना

تَتَمَنَّوْا	مَا	فَضَّلَ	اللّٰهُ	بِهٖ	بَعْضَكُمْ	عَلٰى بَعْضٍ ط	لِلرِّجَالِ
तुम तमन्ना करो	उसकी जो	फ़ज़ीलत दी	अल्लाह ने	साथ उसके	तुम्हारे बाज़ को	बाज़ पर	मर्दों के लिए है

نَصِيْبٌ	مِّمَّا	اكْتَسَبُوْا ط	وَلِلنِّسَآءِ	نَصِيْبٌ	مِّمَّا	اكْتَسَبْنَ ط
एक हिस्सा	उसमें से जो	उन्होंने कमाया	और औरतों के लिए है	एक हिस्सा	उसमें से जो	उन्होंने कमाया

وَسْئَلُوا	اللّٰهَ	مِنْ فَضْلِهٖ ط	إِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	عَلِيْمًا (32)
और सवाल करो	अल्लाह से	उसके फ़ज़्ल का	बेशक	अल्लाह	है	हर	चीज़ को	ख़ूब जानने वाला

وَلِكُلٍّ	جَعَلْنَا	مَوَالِيَ	مِمَّا	تَرَكَ	الْوَالِدٰنِ	وَالْاَقْرَبُوْنَ ط
और हर एक के लिए	बना दिए हमने	वारिस	उसमें से जो	छोड़ जाऐं	वालिदैन	और रिश्तेदार

وَالَّذِيْنَ	عَقَدَتْ	اَيْمَانُكُمْ	فَاٰتُوْهُمْ	نَصِيْبَهُمْ ط	إِنَّ	اللّٰهَ
और वो जिनको	बांध रखा है	तुम्हारे अहदो पैमान ने	पस दो तुम उन्हें	हिस्सा उनका	बेशक	अल्लाह

كَانَ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	شَهِيْدًا (33)	اَلرِّجَالُ	قَوّٰمُوْنَ	عَلَى النِّسَآءِ
है	ऊपर	हर	चीज़ के	ख़ूब गवाह	मर्द	ज़िम्मेदार हैं	औरतों पर

ع 5 8 2

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَنْفَقُوْا	وَّبِمَآ	عَلٰى بَعْضٍ	بَعْضَهُمْ	اللّٰهُ	فَضَّلَ	بِمَا
उन्हों ने ख़र्च किया	और बवजह उसके जो	बाज़ पर	उनके बाज़ को	अल्लाह ने	फ़ज़ीलत दी	बवजह उसके जो

بِمَا	لِّلْغَيْبِ	حٰفِظٰتٌ	قٰنِتٰتٌ	فَالصّٰلِحٰتُ	مِنْ اَمْوَالِهِمْ ط
बवजह उसके जो	ग़ायबाना	हिफ़ाज़त करने वालियां हैं	फ़रमांबरदार हैं	पस नेक औरतें	अपने मालों में से

فَعِظُوْهُنَّ	نُشُوْزَهُنَّ	تَخَافُوْنَ	وَالّٰتِىْ	اللّٰهُ ط	حَفِظَ
पस नसीहत करो उन्हें	उनकी सरकशी से	तुम डरते हो	और वो औरतें जो	अल्लाह ने	हिफ़ाज़त की(उनकी)

اَطَعْنَكُمْ	فَاِنْ	وَاضْرِبُوْهُنَّ ج	فِى الْمَضَاجِعِ	وَاهْجُرُوْهُنَّ
वो इताअत करें तुम्हारी	फिर अगर	और मारो उन्हें	बिस्तरों में	और अलहैदा कर दो उन्हें

كَبِيْرًا (34)	عَلِيًّا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	سَبِيْلًا ط	عَلَيْهِنَّ	تَبْغُوْا	فَلَا
बहुत बड़ा	बहुत बुलंद	है	अल्लाह	बेशक	कोई रास्ता	उन पर	तुम तलाश करो	तो ना

مِّنْ اَهْلِهٖ	حَكَمًا	فَابْعَثُوْا	بَيْنِهِمَا	شِقَاقَ	خِفْتُمْ	وَاِنْ
उस (मर्द) के घरवालों में से	एक मुंसिफ़	तो मुक़र्रर करो	उन दोनों के दर्मियान	इख़्तिलाफ़ से	डरो तुम	और अगर

يُّوَفِّقِ	اِصْلَاحًا	يُّرِيْدَآ	اِنْ	مِّنْ اَهْلِهَا ج	وَحَكَمًا
मुवाफ़िक़त पैदा करदे गा	इस्लाह करना	वो दोनों चाहेंगे	अगर	उस (औरत) के घर वालों में से	और एक मुंसिफ़

وَاعْبُدُوا	خَبِيْرًا (35)	عَلِيْمًا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	بَيْنَهُمَا ط	اللّٰهُ
और इबादत करो	ख़ूब ख़बर रखने वाला	ख़ूब इल्म वाला	है	अल्लाह	बेशक	उन दोनों के दर्मियान	अल्लाह

اِحْسَانًا	وَّبِالْوَالِدَيْنِ	شَيْئًا	بِهٖ	تُشْرِكُوْا	وَلَا	اللّٰهَ
एहसान करना	और साथ वालिदैन के	किसी चीज़ को	साथ उसके	तुम शरीक करो	और ना	अल्लाह की

ذِى الْقُرْبٰى	وَالْجَارِ	وَالْمَسٰكِيْنِ	وَالْيَتٰمٰى	وَّبِذِى الْقُرْبٰى
क़राबतदार के	और पड़ोसी	और मिस्कीनों के	और यतीमों के	और साथ क़राबतदारों के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَا	وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ	بِالْجَنْۢبِ	وَالصَّاحِبِ	الْجُنُبِ	وَالْجَارِ
और जिनके	और मुसाफ़िर/राहगीर के	पहलू के	और साथी	अजनबी के	और पड़ोसी

مُخْتَالًا	كَانَ	مَنْ	لَا يُحِبُّ	اللّٰهَ	اِنَّ	اَيْمَانُكُمْ ؕ	مَلَكَتْ
ख़ुद पसंद	हो	उसे जो	नहीं वो पसंद करता	अल्लाह	बेशक	दाऐं हाथ तुम्हारे	मालिक हुए

بِالْبُخْلِ	النَّاسَ	وَيَاْمُرُوْنَ	يَبْخَلُوْنَ	الَّذِيْنَ	فَخُوْرَا ۨ ۙ (36)
बुख़्ल का	लोगों को	और वो हुक्म देते हैं	बुख़्ल करते हैं	वो लोग जो	फ़ख़्र करने वाला

لِلْكٰفِرِيْنَ	وَاَعْتَدْنَا	مِنْ فَضْلِهٖ ؕ	اللّٰهُ	اٰتٰىهُمُ	مَآ	وَيَكْتُمُوْنَ
काफ़िरों के लिए	और तैयार कर रखा है हमने	अपने फ़ज़्ल से	अल्लाह ने	दिया उन्हें	उसको जो	और वो छुपाते हैं

النَّاسِ	رِئَآءَ	اَمْوَالَهُمْ	يُنْفِقُوْنَ	وَالَّذِيْنَ	مُّهِيْنًا ۚ (37)	عَذَابًا
लोगों को	दिखाने के लिए	अपने मालों को	ख़र्च करते हैं	और वो जो	रुस्वा करने वाला	अज़ाब

الشَّيْطٰنُ	يَّكُنِ	وَمَنْ	بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ	وَلَا	بِاللّٰهِ	يُؤْمِنُوْنَ	وَلَا
शैतान	हो	और जो कोई	आख़िरी दिन पर	और ना	अल्लाह पर	वो ईमान रखते	और नहीं

اٰمَنُوْا	لَوْ	عَلَيْهِمْ	وَمَاذَا	قَرِيْنًا (38)	فَسَآءَ	قَرِيْنًا	لَهٗ
वो ईमान ले आते	अगर	उन पर	और क्या (आफ़त आती)	साथी	तो कितना बुरा है	साथी	उसका

وَكَانَ	اللّٰهُ ؕ	رَزَقَهُمُ	مِمَّا	وَاَنْفَقُوْا	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	بِاللّٰهِ
और है	अल्लाह ने	रिज़्क़ दिया उन्हें	उसमें से जो	और वो ख़र्च करते	और आख़िरी दिन पर	अल्लाह पर

وَاِنْ	ذَرَّةٍ ۚ	مِثْقَالَ	لَا يَظْلِمُ	اللّٰهَ	اِنَّ	عَلِيْمًا (39)	بِهِمْ	اللّٰهُ
और अगर	ज़र्रे के	बराबर	नहीं वो ज़ुल्म करता	अल्लाह	बेशक	ख़ूब जानने वाला	उन्हें	अल्लाह

عَظِيْمًا (40)	اَجْرًا	مِنْ لَّدُنْهُ	وَيُؤْتِ	يُّضٰعِفْهَا	حَسَنَةً	تَكُ
बहुत बड़ा	अज्र	अपने पास से	और वो देगा	वो दो गुना कर देगा उसे	एक नेकी	हो

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

بِكَ	وَّجِئْنَا	بِشَهِيْدٍ	مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ	جِئْنَا	اِذَا	فَكَيْفَ
आपको	और लाऐंगे हम	एक गवाह	हर उम्मत से	लाऐंगे हम	जब	फिर क्या हाल होगा

وقف النبی عليه السلام

وَعَصَوُا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	يَوَدُّ	يَوْمَئِذٍ	شَهِيْدًاؕ ﴿41﴾	عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ
और नाफ़रमानी की	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	चाहेंगे	जिस दिन	गवाह	उन सब पर

اللّٰهَ	يَكْتُمُوْنَ	وَلَا	الْاَرْضُؕ	بِهِمُ	تُسَوّٰى	لَوْ	الرَّسُوْلَ
अल्लाह से	वो छुपा सकेंगे	और ना	ज़मीन	उन पर	बराबर कर दी जाए	काश	रसूल की

ع 6 9 3

وَاَنْتُمْ	الصَّلٰوةَ	لَا تَقْرَبُوا	اٰمَنُوْا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	حَدِيْثًا ﴿42﴾ ع
जबकि तुम	नमाज़ के	ना तुम क़रीब जाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	कोई बात

اِلَّا	جُنُبًا	وَلَا	تَقُوْلُوْنَ	مَا	تَعْلَمُوْا	حَتّٰى	سُكٰرٰى
मगर	हालते जनाबत में	और ना	तुम कहते हो	जो	तुम जान लो	यहां तक कि	नशे में हो

مَّرْضٰۤى	كُنْتُمْ	وَاِنْ	تَغْتَسِلُوْاؕ	حَتّٰى	سَبِيْلٍ	عَابِرِىْ
मरीज़	हो तुम	और अगर	तुम गुस्ल कर लो	यहां तक कि	रास्ते को	उबूर करने वाले हो

اَوْ	مِّنَ الْغَآئِطِ	مِّنْكُمْ	اَحَدٌ	جَآءَ	اَوْ	عَلٰى سَفَرٍ	اَوْ
या	क़ज़ाए हाजत से	तुम में से	कोई एक	आया	या	सफ़र पर	या

طَيِّبًا	صَعِيْدًا	فَتَيَمَّمُوْا	مَآءً	تَجِدُوْا	فَلَمْ	النِّسَآءَ	لٰمَسْتُمُ
पाक से	मिट्टी	तो तयम्मुम कर लो	पानी	तुम पाओ	फिर ना	औरतों को	छुआ हो तुमने

عَفُوًّا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	وَاَيْدِيْكُمْؕ	بِوُجُوْهِكُمْ	فَامْسَحُوْا
बहुत माफ़ करने वाला	है	अल्लाह	बेशक	और अपने हाथों का	अपने चेहरों का	फिर मसह करो

مِّنَ الْكِتٰبِ	نَصِيْبًا	اُوْتُوْا	اِلَى الَّذِيْنَ	تَرَ	اَلَمْ	غَفُوْرًا ﴿43﴾
किताब में से	एक हिस्सा	दिए गए	तरफ़ उनके जो	आपने देखा	क्या नहीं	बहुत बख़्शने वाला

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

يَشْتَرُوْنَ	الضَّلٰلَةَ	وَيُرِيْدُوْنَ	اَنْ	تَضِلُّوا	السَّبِيْلَ ؕ (44)	وَاللّٰهُ
वो ख़रीदते हैं	गुमराही को	और वो चाहते हैं	कि	तुम भटक जाओ	रास्ते से	और अल्लाह

اَعْلَمُ	بِاَعْدَآئِكُمْ ؕ	وَكَفٰى	بِاللّٰهِ	وَلِيًّا ۙ	وَّكَفٰى	بِاللّٰهِ	نَصِيْرًا (45)
ज़्यादा जानता है	तुम्हारे दुश्मनों को	और काफ़ी है	अल्लाह	दोस्त	और काफ़ी है	अल्लाह	मददगार

مِنَ الَّذِيْنَ	هَادُوْا	يُحَرِّفُوْنَ	الْكَلِمَ	عَنْ مَّوَاضِعِهٖ	وَيَقُوْلُوْنَ
उन लोगों में से जो	यहूदी बन गए	वो तब्दील कर देते हैं	अलफ़ाज़ को	उनकी जगहों से	और वो कहते हैं

سَمِعْنَا	وَعَصَيْنَا	وَاسْمَعْ	غَيْرَ مُسْمَعٍ	وَّرَاعِنَا	لَيًّا
सुना हमने	और नाफ़रमानी की हमने	और सुनो तुम	ना सुनवाए जाओ	और राइना (कहते हैं)	मोड़ते हुए

بِاَلْسِنَتِهِمْ	وَطَعْنًا	فِى الدِّيْنِ ؕ	وَلَوْ	اَنَّهُمْ	قَالُوْا
अपनी ज़बानों को	और ऐब लगाने के लिए	दीन में	और अगर	बेशक वो	वो कहते

سَمِعْنَا	وَاَطَعْنَا	وَاسْمَعْ	وَانْظُرْنَا	لَكَانَ	خَيْرًا	لَّهُمْ
सुना हमने	और इताअत की हमने	और सुनिए	और देखिए हमें	अलबत्ता होता	बेहतर	उनके लिए

وَاَقْوَمَ ۙ	وَلٰكِنْ	لَّعَنَهُمُ	اللّٰهُ	بِكُفْرِهِمْ	فَلَا	يُؤْمِنُوْنَ	اِلَّا
और ज़्यादा दुरुस्त	और लेकिन	लाअनत की उन पर	अल्लाह ने	बवजह उनके कुफ़्र के	तो नहीं	वो ईमान लाते	मगर

قَلِيْلًا (46)	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اُوْتُوا	الْكِتٰبَ	اٰمِنُوْا	بِمَا	نَزَّلْنَا
बहुत थोड़ा	ऐ लोगो जो	दिए गए हो	किताब	ईमान लाओ	उस पर जो	नाज़िल किया हमने

مُصَدِّقًا	لِّمَا	مَعَكُمْ	مِّنْ قَبْلِ	اَنْ	نَّطْمِسَ	وُجُوْهًا
तस्दीक़ करने वाला है	उसकी जो	तुम्हारे पास है	इससे पहले	कि	हम मिटा दें	चेहरों को

فَنَرُدَّهَا	عَلٰۤى اَدْبَارِهَاۤ	اَوْ	نَلْعَنَهُمْ	كَمَا	لَعَنَّاۤ
फिर हम फेर दें उन्हें	उनकी पुश्तों पर	या	हम लाअनत करें उन पर	जैसा कि	लाअनत की हमने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهَ	اِنَّ	مَفْعُوْلًا (47)	اللّٰهِ	اَمْرُ	وَكَانَ	اَصْحٰبَ السَّبْتِ ط
अल्लाह	बेशक	होकर रहने वाला	अल्लाह का	हुक्म	और है	सब्त (हफ़्ता) वालों पर

ذٰلِكَ	دُوْنَ	مَا	وَيَغْفِرُ	بِهٖ	يُّشْرَكَ	اَنْ	لَا يَغْفِرُ
उसके	अलावा है	जो	और वो बख़्श देगा	साथ उसके	शिर्क किया जाए	कि	नहीं बख़्शेगा

اِثْمًا	افْتَرٰٓى	فَقَدِ	بِاللّٰهِ	يُّشْرِكْ	وَمَنْ	يَّشَآءُ ج	لِمَنْ
गुनाह	उसने गढ़ लिया	तो तहक़ीक़	साथ अल्लाह के	शिर्क करेगा	और जो कोई	वो चाहेगा	जिसके लिए

بَلِ	اَنْفُسَهُمْ ط	يُزَكُّوْنَ	اِلَى الَّذِيْنَ	تَرَ	اَلَمْ	عَظِيْمًا (48)
बल्कि	अपने नफ़्सों को	पाक क़रार देते हैं	तरफ़ उनके जो	आपने देखा	क्या नहीं	बहुत बड़ा

كَيْفَ	اُنْظُرْ	فَتِيْلًا (49)	يُظْلَمُوْنَ	وَلَا	يَّشَآءُ	مَنْ	يُزَكِّيْ	اللّٰهُ
किस तरह	देखो	धागे बराबर	वो ज़ुल्म किए जाऐंगे	और ना	वो चाहता है	जिसको	पाक करता है	अल्लाह

ع 7 8 4

مُّبِيْنًا (50) ع	اِثْمًا	بِهٖٓ	وَكَفٰى	الْكَذِبَ ط	عَلَى اللّٰهِ	يَفْتَرُوْنَ
खुल्लम-खुल्ला	गुनाह होना	उसका	और काफ़ी है	झूठ	अल्लाह पर	वो गढ़ते हैं

يُؤْمِنُوْنَ	مِّنَ الْكِتٰبِ	نَصِيْبًا	اُوْتُوْا	اِلَى الَّذِيْنَ	تَرَ	اَلَمْ
वो ईमान लाते हैं	किताब में से	एक हिस्सा	दिए गए	तरफ़ उनके जो	आपने देखा	क्या नहीं

هٰٓؤُلَآءِ	كَفَرُوْا	لِلَّذِيْنَ	وَيَقُوْلُوْنَ	وَالطَّاغُوْتِ	بِالْجِبْتِ
यह लोग	कुफ़्र किया	उनके लिए जिन्होंने	और वो कहते हैं	और तागू़त (शैतान) के	साथ जिब्त (जादू)

لَعَنَهُمُ	الَّذِيْنَ	اُولٰٓئِكَ	سَبِيْلًا (51)	اٰمَنُوْا	مِنَ الَّذِيْنَ	اَهْدٰى
लानत की उन पर	वो जो	यही लोग हैं	रास्ते के ऐतबार से	ईमान लाए	उनसे जो	ज़्यादा हिदायत याफ़्ता हैं

نَصِيْرًا (52) ط	لَهٗ	تَجِدَ	فَلَنْ	اللّٰهُ	يَّلْعَنِ	وَمَنْ	اللّٰهُ ط
कोई मददगार	उसके लिए	आप पाऐंगे	तो हरगिज़ नहीं	अल्लाह	लानत कर दे	और जिस पर	अल्लाह ने

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

النَّاسَ	لَّا يُؤْتُوْنَ	فَاِذًا	مِّنَ الْمُلْكِ	نَصِيْبٌ	لَهُمْ	اَمْ
लोगों को	नहीं वो देंगे	तो तब	बादशाहत में से	कोई हिस्सा है	उनके लिए	या

اللّٰهُ	اٰتٰىهُمُ	مَآ	عَلٰى	النَّاسَ	يَحْسُدُوْنَ	اَمْ	نَقِيْرًا ۙ (53)
अल्लाह ने	दिया उन्हें	उसके जो	ऊपर	लोगों से	वो हसद करते हैं	या	खजूर की गुठली में सूराख़ बराबर

وَالْحِكْمَةَ	الْكِتٰبَ	اٰلَ اِبْرٰهِيْمَ	اٰتَيْنَآ	فَقَدْ	مِنْ فَضْلِهٖ ۚ
और हिक्मत	किताब	आले इब्राहीम को	दी हमने	पस तहक़ीक़	अपने फ़ज़्ल से

بِهٖ	اٰمَنَ	مَّنْ	فَمِنْهُمْ	عَظِيْمًا (54)	مُّلْكًا	وَّاٰتَيْنٰهُمْ
उस पर	ईमान लाया	जो	तो उनमें से कोई है	बहुत बड़ी	बादशाहत	और दी हमने उन्हें

اِنَّ	سَعِيْرًا (55)	بِجَهَنَّمَ	وَكَفٰى	عَنْهُ ۭ	صَدَّ	مَّنْ	وَمِنْهُمْ
बेशक	भड़कती हुई	जहन्नम	और काफ़ी है	उससे	रुक गया	जो	और उनमें से कोई है

كُلَّمَا	نَارًا ۭ	نُصْلِيْهِمْ	سَوْفَ	بِاٰيٰتِنَا	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ
जब भी	आग में	हम जलाएंगे उन्हें	अनक़रीब	साथ हमारी आयात के	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने

لِيَذُوْقُوا	غَيْرَهَا	جُلُوْدًا	بَدَّلْنٰهُمْ	جُلُوْدُهُمْ	نَضِجَتْ
ताकि वो चखें	इलावा उनके	खालें	बदल देंगे हम उन्हें	खालें उनकी	पक जाएंगी

اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ	حَكِيْمًا (56)	عَزِيْزًا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	الْعَذَابَ ۭ
ईमान लाए	और वो जो	बहुत हिक्मत वाला	बहुत ज़बरदस्त	है	अल्लाह	बेशक	अज़ाब को

ربع

مِنْ تَحْتِهَا	تَجْرِيْ	جَنّٰتٍ	سَنُدْخِلُهُمْ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا
उनके नीचे से	बहती हैं	बाग़ात में	ज़रूर हम दाख़िल करेंगे उन्हें	नेक	और उन्होंने अमल किए

مُّطَهَّرَةٌ ۡ	اَزْوَاجٌ	فِيْهَآ	لَهُمْ	اَبَدًا ۭ	فِيْهَآ	خٰلِدِيْنَ	الْاَنْهٰرُ
इन्तिहाई पाकीज़ा	बीवियां हैं	उनमें	उनके लिए	हमेशा-हमेशा	उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नहरें

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

تُؤَدُّوا	اَنْ	يَاْمُرُكُمْ	اللّٰهَ	اِنَّ	ظَلِيْلًا ⑤⑦	ظِلًّا	وَّنُدْخِلُهُمْ
तुम अदा करो	कि	हुक्म देता है तुम्हें	अल्लाह	बेशक	घने	साए में	और हम दाख़िल करेंगे उन्हें

اَنْ	النَّاسِ	بَيْنَ	حَكَمْتُمْ	وَاِذَا	اِلٰٓى اَهْلِهَا لا	الْاَمٰنٰتِ
ये कि	लोगों के	दर्मियान	फ़ैसला करो तुम	और जब	तरफ़ उनके अहल के	अमानतों को

اِنَّ	بِهٖ ط	يَعِظُكُمْ	نِعِمَّا	اللّٰهَ	اِنَّ	بِالْعَدْلِ ط	تَحْكُمُوْا
बेशक	उसकी	वो नसीहत करता है तुम्हें	बहुत अच्छी है जो	अल्लाह	बेशक	साथ अदल के	तुम फ़ैसला करो

اللّٰهَ	اَطِيْعُوا	اٰمَنُوْٓا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	بَصِيْرًا ⑤⑧	سَمِيْعًا	كَانَ	اللّٰهَ
अल्लाह की	इताअत करो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	बहुत देखने वाला	बहुत सुनने वाला	है	अल्लाह

تَنَازَعْتُمْ	فَاِنْ	مِنْكُمْ ج	وَاُولِي الْاَمْرِ	الرَّسُوْلَ	وَاَطِيْعُوا
तनाज़ेआ(झगड़ा) हो जाए तुम में	फिर अगर	तुम में से	और ऊलुल अम्र की	रसूल की	और इताअत करो

تُؤْمِنُوْنَ	كُنْتُمْ	اِنْ	وَالرَّسُوْلِ	اِلَى اللّٰهِ	فَرُدُّوْهُ	فِيْ شَيْءٍ
तुम ईमान रखते	हो तुम	अगर	और रसूल के	तरफ़ अल्लाह के	तो फेर दो उसे	किसी चीज़ में

ع 8 9 5

اَلَمْ	تَاْوِيْلًا ⑤⑨ ع	وَّاَحْسَنُ	خَيْرٌ	ذٰلِكَ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط	بِاللّٰهِ
क्या नहीं	अंजाम के ऐतबार से	और ज़्यादा अच्छा है	बेहतर है	ये	और आख़िरी दिन पर	अल्लाह पर

اُنْزِلَ	بِمَآ	اٰمَنُوْا	اَنَّهُمْ	يَزْعُمُوْنَ	اِلَى الَّذِيْنَ	تَرَ
नाज़िल किया गया	उस पर जो	ईमान लाए	बेशक वो	दावा करते हैं	तरफ़ उनके जो	आपने देखा

يَّتَحَاكَمُوْٓا	اَنْ	يُرِيْدُوْنَ	مِنْ قَبْلِكَ	اُنْزِلَ	وَمَآ	اِلَيْكَ
वो फ़ैसला ले जाएं	कि	वो चाहते हैं	आपसे पहले	नाज़िल किया गया	और जो	तरफ़ आपके

وَيُرِيْدُ	بِهٖ ط	يَّكْفُرُوْا	اَنْ	اُمِرُوْٓا	وَقَدْ	اِلَى الطَّاغُوْتِ
और चाहता है	उसका	वो कुफ़्र करें	कि	वो हुक्म दिए गए	हालांकि तहक़ीक़	तरफ़ तागूत के

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَهُمْ	قِيْلَ	وَاِذَا	بَعِيْدًا (60)	ضَلٰلًا	يُّضِلَّهُمْ	اَنْ	الشَّيْطٰنُ
उन्हें	कहा जाता है	और जब	दूर का	गुमराह करना	वो गुमराह कर दे उन्हें	कि	शैतान

الْمُنٰفِقِيْنَ	رَاَيْتَ	وَاِلَى الرَّسُوْلِ	اللّٰهُ	اَنْزَلَ	اِلٰى مَآ	تَعَالَوْا
मुनाफ़िक़ों को	आप देखते हैं	और तरफ़ रसूल के	अल्लाह ने	नाज़िल किया	तरफ़ उसके जो	आओ

مُّصِيْبَةٌ	اَصَابَتْهُمْ	اِذَآ	فَكَيْفَ	صُدُوْدًا (61) ج	عَنْكَ	يَصُدُّوْنَ
कोई मुसीबत	पहुंचती है उन्हें	जब	तो क्या होता है	रुक जाना	आपसे	वो रुकते हैं

اِنْ	بِاللّٰهِ	يَحْلِفُوْنَ ق صلے	جَآءُوْكَ	ثُمَّ	اَيْدِيْهِمْ	قَدَّمَتْ	بِمَا
नहीं	अल्लाह की	क़समें खाते हैं	आ जाते हैं आपके पास	फिर	उनके हाथों ने	आगे भेजा	बवजह उसके जो

اللّٰهُ	يَعْلَمُ	الَّذِيْنَ	اُولٰٓئِكَ	وَّتَوْفِيْقًا (62)	اِحْسَانًا	اِلَّآ	اَرَدْنَآ
अल्लाह	जानता है	वो जो	यही लोग हैं	और मुवाफ़िक़त का	एहसान	मगर	इरादा किया हमने

لَّهُمْ	وَقُلْ	وَعِظْهُمْ	عَنْهُمْ	فَاَعْرِضْ	فِيْ قُلُوْبِهِمْ ق	مَا
उन्हें	और कह दीजिए	और नसीहत कीजिए उन्हें	उनसे	पस आप ऐराज़ कीजिए	उनके दिलों में है	उसको जो

اِلَّا	مِنْ رَّسُوْلٍ	اَرْسَلْنَا	وَمَآ	بَلِيْغًا (63)	قَوْلًا	فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ
मगर	कोई रसूल	भेजा हमने	और नहीं	पहुंचने वाली/पुर असर	बात	उनके दिलों में

اَنْفُسَهُمْ	ظَّلَمُوْٓا	اِذْ	اَنَّهُمْ	وَلَوْ	بِاِذْنِ اللّٰهِ ط	لِيُطَاعَ
अपने नफ़्सों पर	उन्होंने ज़ुल्म किया	जब	बेशक वो	और अगर	अल्लाह के इज़्न से	ताकि वो इताअत किया जाए

لَوَجَدُوا	الرَّسُوْلُ	لَهُمُ	وَاسْتَغْفَرَ	اللّٰهَ	فَاسْتَغْفَرُوا	جَآءُوْكَ
अलबत्ता वो पाते	रसूल	उनके लिए	और बख़्शिश मांगते	अल्लाह से	फिर वो बख़्शिश मांगते	वो आ जाते आपके पास

حَتّٰى	لَا يُؤْمِنُوْنَ	رَبِّكَ	وَ	فَلَا	رَّحِيْمًا (64)	تَوَّابًا	اللّٰهَ
यहां तक कि	नहीं वो मोमिन हो सकते	आपके रब की	क़सम है	पस नहीं	निहायत रहम करने वाला	बहुत तौबा क़ुबूल करने वाला	अल्लाह को

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ	لَا يَجِدُوْا	ثُمَّ	بَيْنَهُمْ	شَجَرَ	فِيْمَا	يُحَكِّمُوْكَ
अपने नफ़्सों में	ना वो पाएं	फिर	दर्मियान उनके	इख़्तिलाफ़ हुआ	उस मामले में जो	वो मुंसिफ़ बनाएं आपको

اَنَّا	وَلَوْ	تَسْلِيْمًا (65)	وَيُسَلِّمُوْا	قَضَيْتَ	مِّمَّا	حَرَجًا
बेशक हम	और अगर	पूरी तरह तसलीम करना	और वो तसलीम कर लें	फ़ैसला करें आप	उससे जो	कोई तंगी

مِنْ دِيَارِكُمْ	اخْرُجُوْا	اَوِ	اَنْفُسَكُمْ	اقْتُلُوْٓا	اَنِ	عَلَيْهِمْ	كَتَبْنَا
अपने घरों से	निकल जाओ	या	अपने नफ़्सों को	क़त्ल करो	कि	उन पर	लिख देते हम

مَا	فَعَلُوْا	اَنَّهُمْ	وَلَوْ	مِّنْهُمْ ؕ	قَلِيْلٌ	اِلَّا	فَعَلُوْهُ	مَّا
जो	करते	बेशक वो	और अगर	उनमें से	थोड़े	मगर	वो करते उसे	ना

وَّاِذًا	تَثْبِيْتًا (66) ۙ	وَاَشَدَّ	لَّهُمْ	خَيْرًا	لَكَانَ	بِهٖ	يُوْعَظُوْنَ
और तब	साबित क़दमी में	और ज़्यादा शदीद	उनके लिए	बेहतर	अलबत्ता होता	जिसकी	वो नसीहत किए जाते हैं

صِرَاطًا	وَّلَهَدَيْنٰهُمْ	عَظِيْمًا (67) ۙ	اَجْرًا	مِّنْ لَّدُنَّآ	لَّاٰتَيْنٰهُمْ
रास्ते	और अलबत्ता हिदायत देते हम उन्हें	बहुत बड़ा	अज्र	अपने पास से	अलबत्ता देते हम उन्हें

الَّذِيْنَ	مَعَ	فَاُولٰٓئِكَ	وَالرَّسُوْلَ	اللّٰهَ	يُّطِعِ	وَمَنْ	مُّسْتَقِيْمًا (68)
उन लोगों के	साथ होंगे	तो यही लोग	और रसूल की	अल्लाह की	इताअत करेगा	और जो कोई	सीधे की

وَالشُّهَدَآءِ	وَالصِّدِّيْقِيْنَ	مِّنَ النَّبِيّٖنَ	عَلَيْهِمْ	اللّٰهُ	اَنْعَمَ
और शोहदा	और सिद्दीक़ीन	नबियों में से	जिन पर	अल्लाह ने	इनाम किया

مِنَ اللّٰهِ ؕ	الْفَضْلُ	ذٰلِكَ	رَفِيْقًا (69) ؕ	اُولٰٓئِكَ	وَحَسُنَ	وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ
अल्लाह की तरफ़ से	फ़ज़्ल है	ये	बतौर साथी के	ये लोग	और कितने अच्छे हैं	और सालेहीन में से

حِذْرَكُمْ	خُذُوْا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	عَلِيْمًا (70) ع	بِاللّٰهِ	وَكَفٰى
बचाव (हथियार) अपना	पकड़ो	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	बहुत इल्म वाला	अल्लाह	और काफ़ी है

ع 9 11 6

لَمَنْ	مِنْكُمْ	وَ اِنَّ	جَمِيْعًا (71)	انْفِرُوْا	اَوِ	ثُبَاتٍ	فَانْفِرُوْا
अलबत्ता वो है जो	तुम में से	और बेशक	सब इकट्ठे	निकलो	या	छोटे दस्तों में	फिर निकलो

عَلَيَّ	اللّٰهُ	اَنْعَمَ	قَدْ	قَالَ	مُّصِيْبَةٌ	اَصَابَتْكُمْ	فَاِنْ	لَّيُبَطِّئَنَّ ج
मुझ पर	अल्लाह ने	इनाम किया	तहक़ीक़	वो कहता है	कोई मुसीबत	पहुंचे तुम्हें	फिर अगर	ज़रूर देर लगाता है

فَضْلٌ	اَصَابَكُمْ	وَلَئِنْ	شَهِيْدًا (72)	مَّعَهُمْ	اَكُنْ	لَمْ	اِذْ
कोई फ़ज़्ल	पहुंचे तुम्हें	और अलबत्ता अगर	हाज़िर/मौजूद	साथ उनके	था मैं	ना	जबकि

مَوَدَّةٌ	وَ بَيْنَهٗ	بَيْنَكُمْ	تَكُنْۢ	لَّمْ	كَاَنْ	لَيَقُوْلَنَّ	مِّنَ اللّٰهِ
कोई मोहब्बत	और दर्मियान उसके	दर्मियान तुम्हारे	थी	ना	गोया कि	अलबत्ता वो ज़रूर कहेगा	अल्लाह की तरफ़ से

فَلْيُقَاتِلْ	عَظِيْمًا (73)	فَوْزًا	فَاَفُوْزَ	مَعَهُمْ	كُنْتُ	يٰلَيْتَنِيْ
पस चाहिए कि जंग करें	बहुत बड़ी	कामयाबी	तो मैं कामयाबी पाता	साथ उनके	होता मैं	हाय अफ़सोस मुझ पर

وَمَنْ	بِالْاٰخِرَةِ ط	الدُّنْيَا	الْحَيٰوةَ	يَشْرُوْنَ	الَّذِيْنَ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
और जो कोई	बदले आख़िरत के	दुनिया की	ज़िंदगी	बेच देते हैं	वो जो	अल्लाह के रास्ते में

نُؤْتِيْهِ	فَسَوْفَ	يَغْلِبْ	اَوْ	فَيُقْتَلْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	يُّقَاتِلْ
हम देंगे उसे	पस अनक़रीब	वो ग़ालिब आ जाए	या	फिर वो क़त्ल कर दिया जाए	अल्लाह के रास्ते में	जंग करे

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	لَا تُقَاتِلُوْنَ	لَكُمْ	وَمَا	عَظِيْمًا (74)	اَجْرًا
अल्लाह के रास्ते में	नहीं तुम जंग करते	तुम्हें	और क्या है	बहुत बड़ा	अज्र

يَقُوْلُوْنَ	الَّذِيْنَ	وَالْوِلْدَانِ	وَالنِّسَآءِ	مِنَ الرِّجَالِ	وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ
कहते हैं	वो जो	और बच्चों (में से)	और औरतों	मर्दों में से	हालांकि जो कमज़ोर हैं

وَاجْعَلْ	اَهْلُهَا ج	الظَّالِمِ	مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ	اَخْرِجْنَا	رَبَّنَآ
और बना दे	रहने वाले इसके	ज़ालिम हैं	इस बस्ती से	निकाल हमें	ऐ हमारे रब

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

نَصِيرًا ۭ (75)	مِن لَّدُنكَ	لَّنَا	وَّاجْعَل	وَلِيًّا ۚ	مِن لَّدُنكَ	لَّنَا
कोई मददगार	अपने पास से	हमारे लिए	और बना दे	कोई हिमायती	अपने पास से	हमारे लिए

كَفَرُوا	وَالَّذِينَ	فِي سَبِيلِ اللّٰهِ ۚ	يُقَاتِلُونَ	اٰمَنُوا	اَلَّذِينَ
कुफ़्र किया	और वो जिन्होंने	अल्लाह के रास्ते में	वो जंग करते हैं	ईमान लाए	वो जो

اِنَّ	الشَّيْطٰنِ ۚ	اَوْلِيَآءَ	فَقَاتِلُوٓا	فِي سَبِيلِ الطَّاغُوتِ	يُقَاتِلُونَ
बेशक	शैतान के	दोस्तों से	पस जंग करो	तागूत के रास्ते में	वो जंग करते हैं

قِيلَ	اِلَى الَّذِينَ	تَرَ	اَلَمْ	ضَعِيفًا (76) ع	كَانَ	الشَّيْطٰنِ	كَيْدَ
कहा गया	तरफ़ उनके	आपने देखा	क्या नहीं	बहुत कमज़ोर	है	शैतान की	चाल

10 ع 6 7

فَلَمَّا	الزَّكٰوةَ ۚ	وَاٰتُوا	الصَّلٰوةَ	وَاَقِيمُوا	اَيْدِيَكُمْ	كُفُّوٓا	لَهُمْ
तो जब	ज़कात	और अदा करो	नमाज़	और क़ायम करो	अपने हाथों को	रोके रखो	जिन्हें

النَّاسَ	يَخْشَوْنَ	مِّنْهُمْ	فَرِيقٌ	اِذَا	الْقِتَالُ	عَلَيْهِمُ	كُتِبَ
लोगों से	वो डर रहे थे	उनमें से	एक गिरोह(के लोग)	तब	जंग करना	उन पर	फ़र्ज़ किया गया

لِمَ	رَبَّنَا	وَقَالُوا	خَشْيَةً ۚ	اَشَدَّ	اَوْ	اللّٰهِ	كَخَشْيَةِ
क्यों	ऐ हमारे रब	और उन्होंने कहा	डरना	ज़्यादा शदीद	या	अल्लाह से	जैसा डरना

قَرِيبٍ ۭ	اِلٰٓى اَجَلٍ	اَخَّرْتَنَآ	لَوْلَآ	الْقِتَالَ ۚ	عَلَيْنَا	كَتَبْتَ
क़रीब की	एक मुद्दत तक	तू ने मोहलत दी हमें	क्यों ना	जंग करना	हम पर	फ़र्ज़ किया तूने

وَلَا	اتَّقٰى ۗ قف	لِّمَنِ	خَيْرٌ	وَالْاٰخِرَةُ	قَلِيلٌ ۚ	الدُّنْيَا	مَتَاعُ	قُلْ
और ना	तक़वा करे	उसके लिए जो	बेहतर है	और आख़िरत	बहुत थोड़ा है	दुनिया का	फ़ायदा	कह दीजिए

كُنْتُمْ	وَلَوْ	الْمَوْتُ	يُدْرِكْكُّمُ	تَكُونُوا	اَيْنَ مَا	فَتِيلًا (77)	تُظْلَمُونَ
हो तुम	और अगरचे	मौत	पा लेगी तुम्हें	तुम होगे	जहां कहीं	धागे बराबर	तुम ज़ुल्म किए जाओगे

هٰذِهٖ	يَّقُوْلُوْا	حَسَنَةٌ	تُصِبْهُمْ	وَاِنْ	مُّشَيَّدَةٍ ۭ	فِيْ بُرُوْجٍ
ये	वो कहते हैं	कोई भलाई	पहुंचती है उन्हें	और अगर	मज़बूत	क़िलों में

مِنْ عِنْدِكَ ۭ	هٰذِهٖ	يَّقُوْلُوْا	سَيِّئَةٌ	تُصِبْهُمْ	وَاِنْ	مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ
आपकी तरफ़ से है	ये	वो कहते हैं	कोई बुराई	पहुंचती है उन्हें	और अगर	अल्लाह की तरफ़ से है

لَا يَكَادُوْنَ	الْقَوْمِ	هٰٓؤُلَاۗءِ	فَمَالِ	مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ	كُلٌّ	قُلْ
नहीं वो क़रीब होते	क़ौम के	इस	तो क्या है वास्ते	अल्लाह की तरफ़ से है	सब कुछ	कह दीजिए

وَمَآ	فَمِنَ اللّٰهِ ۡ	مِنْ حَسَنَةٍ	اَصَابَكَ	مَآ	حَدِيْثًا (78)	يَفْقَهُوْنَ
और जो भी	तो अल्लाह की तरफ़ से है	कोई भलाई	पहुंचती है तुझको	जो भी	बात को	कि वो समझें

رَسُوْلًا ۭ	لِلنَّاسِ	وَاَرْسَلْنٰكَ	فَمِنْ نَّفْسِكَ ۭ	مِنْ سَيِّئَةٍ	اَصَابَكَ
रसूल बना कर	लोगों के लिए	और भेजा हमने आपको	तो तुम्हारे नफ़्स की तरफ़ से है	कोई बुराई	पहुंचती है तुझको

اَطَاعَ	فَقَدْ	الرَّسُوْلَ	يُّطِعِ	مَنْ	شَهِيْدًا (79)	بِاللّٰهِ	وَكَفٰى
उसने इताअत की	पस तहक़ीक़	रसूल की	इताअत की	जिसने	गवाह	अल्लाह	और काफ़ी है

وَيَقُوْلُوْنَ	حَفِيْظًا (80) ۭ	عَلَيْهِمْ	اَرْسَلْنٰكَ	فَمَآ	تَوَلّٰى	وَمَنْ	اللّٰهَ ۚ
और वो कहते हैं	निगरान	उन पर	भेजा हमने आपको	तो नहीं	मुंह मोड़ा	और जिसने	अल्लाह की

مِّنْهُمْ	طَاۗىِٕفَةٌ	بَيَّتَ	مِنْ عِنْدِكَ	بَرَزُوْا	فَاِذَا	طَاعَةٌ ۡ
उनमें से	एक गिरोह	रात को मशवरे करता है	आपके पास से	वो निकलते हैं	फिर जब	इताअत (करेंगे)

فَاَعْرِضْ	يُبَيِّتُوْنَ ۚ	مَا	يَكْتُبُ	وَاللّٰهُ	تَقُوْلُ ۭ	الَّذِيْ	غَيْرَ
पस ऐराज़ कीजिए	वो रात को मशवरे करते हैं	जो	लिख रहा है	और अल्लाह	आप कहते हैं	उसके जो	अलावा

يَتَدَبَّرُوْنَ	اَفَلَا	وَكِيْلًا (81)	بِاللّٰهِ	وَكَفٰى	عَلَى اللّٰهِ ۭ	وَتَوَكَّلْ	عَنْهُمْ
वो तदब्बुर करते	क्या फिर नहीं	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	अल्लाह पर	और भरोसा कीजिए	उनसे

©AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الْقُرْاٰنَ ؕ	وَلَوْ	كَانَ	مِنْ عِنْدِ	غَيْرِ	اللّٰهِ	لَوَجَدُوْا	فِيْهِ	اخْتِلَافًا
क़ुरआन में	और अगर	होता वो	पास से	ग़ैर	अल्लाह के	अलबत्ता वो पाते	इसमें	इख़्तिलाफ़

كَثِيْرًا (82)	وَاِذَا	جَآءَهُمْ	اَمْرٌ	مِّنَ الْاَمْنِ	اَوِ	الْخَوْفِ	اَذَاعُوْا
बहुत ज़्यादा	और जब	आता है उनके पास	कोई मामला	अमन में से	या	ख़ौफ़ में से	वो फैला देते हैं

بِهٖ ؕ	وَلَوْ	رَدُّوْهُ	اِلَى الرَّسُوْلِ	وَاِلٰٓى	اُولِي الْاَمْرِ	مِنْهُمْ
उसे	और अगर	वो लौटाते उसे	तरफ़ रसूल के	और तरफ़	ऊलुल अम्र के	उनमें से

لَعَلِمَهُ	الَّذِيْنَ	يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ	مِنْهُمْ ؕ	وَلَوْلَا	فَضْلُ	اللّٰهِ
अलबत्ता जान लेते उसे	वो जो	निकाल लाते हैं नतीजा उसका	उनमें से	और अगर ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का

عَلَيْكُمْ	وَرَحْمَتُهٗ	لَاتَّبَعْتُمُ	الشَّيْطٰنَ	اِلَّا	قَلِيْلًا (83)	فَقَاتِلْ
तुम पर	और रहमत उसकी	अलबत्ता पैरवी करते तुम	शैतान की	मगर	बहुत थोड़े	तो जंग कीजिए

فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ	لَا تُكَلَّفُ	اِلَّا	نَفْسَكَ	وَحَرِّضِ	الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
अल्लाह के रास्ते में	नहीं आप मुकल्लफ़ बनाए गए	मगर	अपनी जान के	और उभारिए	मोमिनों को

عَسَى	اللّٰهُ	اَنْ	يَّكُفَّ	بَاْسَ	الَّذِيْنَ	كَفَرُوْا ؕ	وَاللّٰهُ	اَشَدُّ
उम्मीद है	अल्लाह	कि	वो रोक दे	जंग	उनकी जिन्होंने	कुफ़्र किया	और अल्लाह	ज़्यादा सख़्त है

بَاْسًا	وَّاَشَدُّ	تَنْكِيْلًا (84)	مَنْ	يَّشْفَعْ	شَفَاعَةً	حَسَنَةً	يَّكُنْ
ताक़त में	और ज़्यादा सख़्त है	इबरतनाक सज़ा देने में	जो कोई	सिफ़ारिश करेगा	सिफ़ारिश	अच्छी	होगा

لَّهٗ	نَصِيْبٌ	مِّنْهَا ۚ	وَمَنْ	يَّشْفَعْ	شَفَاعَةً	سَيِّئَةً	يَّكُنْ
उसके लिए	एक हिस्सा	उसमें से	और जो कोई	सिफ़ारिश करेगा	सिफ़ारिश	बुरी	होगा

لَّهٗ	كِفْلٌ	مِّنْهَا ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَلٰى	كُلِّ	شَيْءٍ	مُّقِيْتًا (85)
उसके लिए	एक हिस्सा	उसमें से	और है	अल्लाह	ऊपर	हर	चीज़ के	निगरान

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

رُدُّوْهَا ط	اَوْ	مِنْهَآ	بِاَحْسَنَ	فَحَيُّوْا	بِتَحِيَّةٍ	حُيِّيْتُمْ	وَاِذَا
लौटा दो उसे	या	उससे	ज़्यादा अच्छी	तो तुम भी दुआ दो	कोई दुआ	दुआ दिए जाओ तुम	और जब

اِلٰهَ	لَآ	اَللّٰهُ	حَسِيْبًا (86)	شَیْءٍ	كُلِّ	عَلٰی	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	النصف
कोई इलाह (बरहक़)	नहीं	अल्लाह	ख़ूब हिसाब लेने वाला	चीज़ के	हर	ऊपर	है	अल्लाह	बेशक	

وَمَنْ	فِيْهِ ط	رَيْبَ	لَا	الْقِيٰمَةِ	اِلٰی يَوْمِ	لَيَجْمَعَنَّكُمْ	هُوَ ط	اِلَّا
और कौन	इसमें	कोई शक	नहीं	क़यामत के	तरफ़ दिन	अलबत्ता वो ज़रूर जमा करेगा तुम्हें	वही	मगर

فِئَتَيْنِ	فِی الْمُنٰفِقِيْنَ	لَكُمْ	فَمَا	حَدِيْثًا (87) ع	مِنَ اللّٰهِ	اَصْدَقُ	ع 11 11 8
दो गिरोह(हो गए हो)	मुनाफ़िक़ों के बारे में	तुम्हें	तो क्या है	बात में	अल्लाह से (बढ़ कर)	ज़्यादा सच्चा है	

مَنْ	تَهْدُوْا	اَنْ	اَتُرِيْدُوْنَ	كَسَبُوْا ط	بِمَا	اَرْكَسَهُمْ	وَاللّٰهُ
उसको जिसे	तुम हिदायत दो	कि	क्या तुम चाहते हो	उन्होंने कमाई की	बवजह उसके जो	उल्टा फेर दिया उन्हें	और अल्लाह ने

سَبِيْلًا (88)	لَهٗ	تَجِدَ	فَلَنْ	اللّٰهُ	يُّضْلِلِ	وَمَنْ	اللّٰهُ ط	اَضَلَّ
कोई रास्ता	उसके लिए	तुम पाओगे	तो हरगिज़ नहीं	अल्लाह	गुमराह कर दे	और जिसे	अल्लाह ने	गुमराह कर दिया

فَلَا	سَوَآءً	فَتَكُوْنُوْنَ	كَفَرُوْا	كَمَا	تَكْفُرُوْنَ	لَوْ	وَدُّوْا
तो ना	बराबर	तो तुम हो जाओ	उन्होंने कुफ़्र किया	जैसा कि	तुम कुफ़्र करो	कि काश	वो दिल से चाहते हैं

فَاِنْ	فِیْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط	يُهَاجِرُوْا	حَتّٰی	اَوْلِيَآءَ	مِنْهُمْ	تَتَّخِذُوْا
फिर अगर	अल्लाह के रास्ते में	वो हिजरत कर जाएं	यहां तक कि	दोस्त	उनमें से	तुम बनाओ

وَلَا	وَجَدْتُّمُوْهُمْ ص	حَيْثُ	وَاقْتُلُوْهُمْ	فَخُذُوْهُمْ	تَوَلَّوْا
और ना	पाओ तुम उन्हें	जहां कहीं	और क़त्ल करो उन्हें	तो पकड़ो उन्हें	वो मुंह मोड़ जाएं

يَصِلُوْنَ	الَّذِيْنَ	اِلَّا	نَصِيْرًا (89) لا	وَّلَا	وَلِيًّا	مِنْهُمْ	تَتَّخِذُوْا
जा मिलते हैं	उन लोगों के जो	सिवाय	कोई मददगार	और ना	कोई दोस्त	उनमें से	तुम बनाओ

AL-HIDAYAH INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

الى قوم	بينكم	و بينهم	ميثاق	او	جاءوكم	حصرت
एक क़ौम से	दर्मियान तुम्हारे	और दर्मियान उनके	पुख़्ता अहद है	या	वो आते हैं तुम्हारे पास	कि तंग होगए

صدورهم	ان	يقاتلوكم	او	يقاتلوا	قومهم ط	و لو	شاء	الله
सीने उनके	कि	वो जंग करें तुमसे	या	वो जंग करें	अपनी क़ौम से	और अगर	चाहता	अल्लाह

لسلطهم	عليكم	فلقتلوكم ج	فان	اعتزلوكم	فلم	يقاتلوكم
अलबत्ता मुसल्लत कर देता उन्हें	तुम पर	पस ज़रूर वो जंग करते तुमसे	फिर अगर	वो अलग रहें तुमसे	फिर ना	वो जंग करें तुमसे

و القوا	اليكم	السلم لا	فما	جعل	الله	لكم	عليهم
और वो डालें	तरफ़ तुम्हारे	सुलाह को	तो नहीं	बनाया	अल्लाह ने	तुम्हारे लिए	उन पर

سبيلا (90)	ستجدون	اخرين	يريدون	ان	يامنوكم	و يامنوا
कोई रास्ता	अनक़रीब तुम पाओगे	कुछ दूसरों को	वो चाहते हैं	कि	वो अमन में रहें तुमसे	और वो अमन में रहें

قومهم ط	كلما	ردوا	الى الفتنة	اركسوا	فيها ج	فان
अपनी क़ौम से	जब कभी	वो लौटाए जाते हैं	तरफ़ फ़ितने के	वो उल्टा दिए जाते हैं	उसमें	फिर अगर

لم	يعتزلوكم	و يلقوا	اليكم	السلم	و يكفوا	ايديهم
ना	वो अलग रहें तुमसे	और(ना) वो डालें	तरफ़ तुम्हारे	सुलह को	और(ना) वो रोकें	अपने हाथों को

فخذوهم	و اقتلوهم	حيث	ثقفتموهم ط	و اولئكم	جعلنا	لكم
तो पकड़ो उन्हें	और क़त्ल करो उन्हें	जहां कहीं	पाओ तुम उन्हें	और यही वो लोग हैं	बनाया हमने	तुम्हारे लिए

ع 12 / 4 / 9

عليهم	سلطنا	مبينا (91) ع	و ما	كان	لمؤمن	ان	يقتل
जिन पर	ग़लबा	वाज़ेह	और नहीं	है	किसी मोमिन के लिए	कि	वो क़त्ल कर दे

مؤمنا	الا	خطا ج	و من	قتل	مؤمنا	خطا	فتحرير
किसी मोमिन को	मगर	ख़ता से	और जो	क़त्ल करे	किसी मोमिन को	ख़ता से	तो आज़ाद करना है

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اِلَّا	اَهۡلِهٖۤ	اِلٰۤى	مُّسَلَّمَةٌ	وَّدِيَةٌ	مُّؤۡمِنَةٍ	رَقَبَةٍ
मगर	उसके अहल (वारिस) के	तरफ़	जो सुपुर्द की जाएगी	और दियत	मोमिन का	एक गर्दन (ग़ुलाम)

وَهُوَ	لَّكُمۡ	عَدُوٍّ	مِنۡ قَوۡمٍ	كَانَ	فَاِنۡ	يَّصَّدَّقُوۡا ؕ	اَنۡ
और वो	तुम्हारी	जो दुश्मन है	ऐसी क़ौम से	है वो	फिर अगर	वो माफ़ कर दें	ये कि

مِنۡ قَوۡمٍۢ	كَانَ	وَاِنۡ	مُّؤۡمِنَةٍ ؕ	رَقَبَةٍ	فَتَحۡرِيۡرُ	مُؤۡمِنٌ
उस क़ौम से	है वो	और अगर	मोमिन का	एक गर्दन (ग़ुलाम)	तो आज़ाद करना है	मोमिन है

اَهۡلِهٖ	اِلٰۤى	مُّسَلَّمَةٌ	فَدِيَةٌ	مِّيۡثَاقٌ	وَبَيۡنَهُمۡ	بَيۡنَكُمۡ
उसके अहल (वारिस) के	तरफ़	जो सुपुर्द की जाएगी	तो दियत	पुख़्ता अहद है	और दर्मियान उनके	दर्मियान तुम्हारे

فَصِيَامُ	يَجِدۡ	لَّمۡ	فَمَنۡ	مُّؤۡمِنَةٍ ۚ	رَقَبَةٍ	وَتَحۡرِيۡرُ
पस रोज़े रखना है	पाए	ना	तो जो कोई	मोमिन का	एक गर्दन (ग़ुलाम)	और आज़ाद करना है

عَلِيۡمًا	اللّٰهُ	وَكَانَ	مِّنَ اللّٰهِ ؕ	تَوۡبَةً	مُتَتَابِعَيۡنِ ز	شَهۡرَيۡنِ
बहुत इल्म वाला	अल्लाह	और है	अल्लाह की तरफ़ से	तौबा का (क़ुबूल करना है)	मुसलसल/पे-दर-पे	दो माह

جَهَنَّمُ	فَجَزَآؤُهٗ	مُّتَعَمِّدًا	مُؤۡمِنًا	يَّقۡتُلۡ	وَمَنۡ	حَكِيۡمًا (92)
जहन्नम	तो बदला है उसका	जान-बूझ कर	किसी मोमिन को	क़त्ल करे	और जो	बहुत हिक्मत वाला

وَاَعَدَّ	وَلَعَنَهٗ	عَلَيۡهِ	اللّٰهُ	وَغَضِبَ	فِيۡهَا	خٰلِدًا
और उसने तैयार कर रखा है	और उसने लानत की उस पर	उस पर	अल्लाह	और ग़ज़बनाक हुआ	उसमें	हमेशा रहने वाला है

ضَرَبۡتُمۡ	اِذَا	اٰمَنُوۡۤا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ	عَظِيۡمًا (93)	عَذَابًا	لَهٗ
सफ़र करो तुम	जब	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	बहुत बड़ा	अज़ाब	उसके लिए

السَّلٰمَ	اِلَيۡكُمُ	اَلۡقٰۤى	لِمَنۡ	تَقُوۡلُوۡا	وَلَا	فَتَبَيَّنُوۡا	فِىۡ سَبِيۡلِ اللّٰهِ
सलाम	तरफ़ तुम्हारे	डाले	उसके लिए जो	तुम कहो	और ना	तो तहक़ीक़ कर लिया करो	अल्लाह के रास्ते में

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اللّٰهِ	فَعِنْدَ	الدُّنْيَا ز	الْحَيٰوةِ	عَرَضَ	تَبْتَغُوْنَ	مُؤْمِنًا ج	لَسْتَ
अल्लाह के	तो पास	दुनिया की	ज़िंदगी का	सामान	तुम चाहते हो	मोमिन	नहीं हो तुम

عَلَيْكُمْ	اللّٰهُ	فَمَنَّ	مِّنْ قَبْلُ	كُنْتُمْ	كَذٰلِكَ	كَثِيْرَةٌ ط	مَغَانِمُ
तुम पर	अल्लाह ने	तो एहसान	इससे पहले	थे तुम	इसी तरह	बहुत सी	ग़नीमतें हैं

لَا يَسْتَوِي	خَبِيْرًا (94)	تَعْمَلُوْنَ	بِمَا	كَانَ	اللّٰهَ	اِنَّ	فَتَبَيَّنُوْا ط
नहीं बराबर हो सकते	ख़ूब ख़बर रखने वाला	तुम अमल करते हो	उसकी जो	है	अल्लाह	बेशक	पस तहक़ीक़ कर लिया करो

وَالْمُجٰهِدُوْنَ	اُولِي الضَّرَرِ	غَيْرُ	مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ	الْقٰعِدُوْنَ
और जो जिहाद करने वाले हैं	ज़रर वालों (माज़ूर) के	सिवाए	मोमिनों में से	जो बैठने वाले हैं

الْمُجٰهِدِيْنَ	اللّٰهُ	فَضَّلَ	وَاَنْفُسِهِمْ ط	بِاَمْوَالِهِمْ	فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
जिहाद करने वालों को	अल्लाह ने	फ़ज़ीलत दी	और अपनी जानों के	साथ अपने मालों के	अल्लाह के रास्ते में

وَعَدَ	وَكُلًّا	دَرَجَةً ط	عَلَى الْقٰعِدِيْنَ	وَاَنْفُسِهِمْ	بِاَمْوَالِهِمْ
वादा कर रखा है	और हर एक से	दर्जे में	बैठने वालों पर	और अपनी जानों के	साथ अपने मालों के

عَلَى الْقٰعِدِيْنَ	الْمُجٰهِدِيْنَ	اللّٰهُ	وَفَضَّلَ	الْحُسْنٰى ط	اللّٰهُ
बैठने वालों पर	जिहाद करने वालों को	अल्लाह ने	और फ़ज़ीलत दी	अच्छा	अल्लाह ने

وَكَانَ	وَّرَحْمَةً ط	وَّمَغْفِرَةً	مِّنْهُ	دَرَجٰتٍ	عَظِيْمًا لا (95)	اَجْرًا
और है	और रहमत है	और बख़्शिश	उसकी तरफ़ से	दरजात हैं	बहुत बड़े	अज्र की

13 ع 5 10

الْمَلٰٓئِكَةُ	تَوَفّٰهُمُ	الَّذِيْنَ	اِنَّ	رَّحِيْمًا ع (96)	غَفُوْرًا	اللّٰهُ
फ़रिश्ते	फ़ौत करते हैं उन्हें	वो जो	बेशक	निहायत रहम करने वाला	बहुत बख़्शने वाला	अल्लाह

كُنَّا	قَالُوْا	كُنْتُمْ ط	فِيْمَ	قَالُوْا	اَنْفُسِهِمْ	ظَالِمِيْٓ
थे हम	वो कहते हैं	थे तुम	किस (हाल) में	वो कहते हैं	अपनी जानों पर	(जबकि वो) ज़ुल्म करने वाले हैं

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مُسْتَضْعَفِيْنَ	فِى الْاَرْضِ ؕ	قَالُوْٓا	اَلَمْ	تَكُنْ	اَرْضُ	اللّٰهِ	وَاسِعَةً
कमज़ोर	ज़मीन में	वो कहते हैं	क्या नहीं	थी	ज़मीन	अल्लाह की	वसीअ

فَتُهَاجِرُوْا	فِيْهَا ؕ	فَاُولٰٓئِكَ	مَاْوٰىهُمْ	جَهَنَّمُ ؕ	وَسَآءَتْ
पस तुम हिजरत कर जाते	उसमें	तो यही लोग हैं	ठिकाना उनका	जहन्नम है	और कितना बुरा है

مَصِيْرًا ۙ (97)	اِلَّا	الْمُسْتَضْعَفِيْنَ	مِنَ الرِّجَالِ	وَالنِّسَآءِ	وَالْوِلْدَانِ
ठिकाना	सिवाए (उनके)	जो कमज़ोर हैं	मर्दों में से	और औरतों में से	और बच्चों में से

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ	حِيْلَةً	وَّلَا	يَهْتَدُوْنَ	سَبِيْلًا ۙ (98)	فَاُولٰٓئِكَ	عَسَى
नहीं वो इस्तिताअत रखते	किसी हीले/तदबीर की	और नहीं	वो पाते	कोई रास्ता	पस यही लोग	उम्मीद है

اللّٰهُ	اَنْ	يَّعْفُوَ	عَنْهُمْ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	عَفُوًّا	غَفُوْرًا (99)
अल्लाह	कि	दरगुज़र करे	उनसे	और है	अल्लाह	बहुत माफ़ करने वाला	बहुत बख़्शने वाला

وَمَنْ	يُّهَاجِرْ	فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ	يَجِدْ	فِى الْاَرْضِ	مُرٰغَمًا
और जो कोई	हिजरत करेगा	अल्लाह के रास्ते में	वो पाएगा	ज़मीन में	जाए पनाह

كَثِيْرًا	وَّسَعَةً ؕ	وَمَنْ	يَّخْرُجْ	مِنْۢ بَيْتِهٖ	مُهَاجِرًا	اِلَى اللّٰهِ
बहुत सी	और वुसअत	और जो कोई	निकलेगा	अपने घर से	हिजरत करते हुए	तरफ़ अल्लाह के

وَرَسُوْلِهٖ	ثُمَّ	يُدْرِكْهُ	الْمَوْتُ	فَقَدْ	وَقَعَ	اَجْرُهٗ	عَلَى اللّٰهِ ؕ
और उसके रसूल के	फिर	पा ले उसे	मौत	तो तहक़ीक़	वाक़ेअ हो गया	अज्र उसका	अल्लाह पर

وَكَانَ	اللّٰهُ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (100) ع	وَاِذَا	ضَرَبْتُمْ	فِى الْاَرْضِ
और है	अल्लाह	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और जब	सफ़र करो तुम	ज़मीन में

ع 14 4 11

فَلَيْسَ	عَلَيْكُمْ	جُنَاحٌ	اَنْ	تَقْصُرُوْا	مِنَ الصَّلٰوةِ ۖ	اِنْ	خِفْتُمْ
तो नहीं है	तुम पर	कोई गुनाह	कि	तुम क़सर कर लो	नमाज़ में से	अगर	ख़ौफ़ हो तुम्हें

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

لَكُمْ	كَانُوْا	الْكٰفِرِيْنَ	اِنَّ	كَفَرُوْا ط	الَّذِيْنَ	يَّفْتِنَكُمُ	اَنْ
तुम्हारे लिए	हैं	काफ़िर	बेशक	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	फ़ितने में डालेंगे तुम्हें	कि

الصَّلٰوةَ	لَهُمُ	فَاَقَمْتَ	فِيْهِمْ	كُنْتَ	وَاِذَا	مُّبِيْنًا (101)	عَدُوًّا
नमाज़	उनके लिए	तो क़ायम करें आप	उनमें	हों आप	और जब	खुल्लम-खुल्ला	दुश्मन

اَسْلِحَتَهُمْ قف	وَلْيَاْخُذُوْٓا	مَّعَكَ	مِّنْهُمْ	طَآئِفَةٌ	فَلْتَقُمْ
अस्लिहा अपना	और चाहिए कि वो पकड़े रहें	आपके साथ	उनमें से	एक जमाअत	तो चाहिए कि खड़ी हो

اُخْرٰى	طَآئِفَةٌ	وَلْتَاْتِ	مِنْ وَّرَآئِكُمْ ص	فَلْيَكُوْنُوْا	سَجَدُوْا	فَاِذَا
दूसरी	जमाअत	और चाहिए कि आए	तुम्हारे पीछे	पस चाहिए कि वो हों	वो सज्दा करें	फिर जब

حِذْرَهُمْ	وَلْيَاْخُذُوْا	مَعَكَ	فَلْيُصَلُّوْا	يُصَلُّوْا	لَمْ
बचाव अपना	और चाहिए कि वो पकड़े रहें	आपके साथ	पस चाहिए कि वो नमाज़ पढ़ें	उन्होंने नमाज़ पढ़ी	नहीं

تَغْفُلُوْنَ	لَوْ	كَفَرُوْا	الَّذِيْنَ	وَدَّ	وَاَسْلِحَتَهُمْ ج
तुम ग़ाफ़िल हो जाओ	काश	कुफ़्र किया	वो जिन्होंने	चाहते हैं	और अस्लिहा अपना

مَّيْلَةً	عَلَيْكُمْ	فَيَمِيْلُوْنَ	وَاَمْتِعَتِكُمْ	عَنْ اَسْلِحَتِكُمْ
हमला करना	तुम पर	तो वो हमला कर दें	और अपने साज़ो सामान से	अपने अस्लिहा से

اَذًى	بِكُمْ	كَانَ	اِنْ	عَلَيْكُمْ	جُنَاحَ	وَلَا	وَّاحِدَةً ط
कोई तकलीफ़	तुम्हें	है	अगर	तुम पर	कोई गुनाह	और नहीं	एक ही बार

وَخُذُوْا	اَسْلِحَتَكُمْ ج	تَضَعُوْٓا	اَنْ	مَّرْضٰٓى	كُنْتُمْ	اَوْ	مِّنْ مَّطَرٍ
और पकड़े रहो	अस्लिहा अपना	तुम रख दो	कि	बीमार	हो तुम	या	बारिश से

فَاِذَا	مُّهِيْنًا (102)	عَذَابًا	لِّلْكٰفِرِيْنَ	اَعَدَّ	اللّٰهَ	اِنَّ	حِذْرَكُمْ ط
फिर जब	रुस्वाकुन	अज़ाब	काफ़िरों के लिए	तैयार कर रखा है	अल्लाह ने	बेशक	बचाव अपना

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

قَضَيْتُمُ	الصَّلٰوةَ	فَاذْكُرُوا	اللّٰهَ	قِيٰمًا	وَّقُعُوْدًا	وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ج
पूरा कर चुको तुम	नमाज़ को	तो याद करो	अल्लाह को	खड़े	और बैठे	और अपने पहलुओं पर

فَاِذَا	اطْمَاْنَنْتُمْ	فَاَقِيْمُوا	الصَّلٰوةَ ج	اِنَّ	الصَّلٰوةَ	كَانَتْ
फिर जब	इत्मिनान में आ जाओ तुम	तो क़ायम करो	नमाज़	बेशक	नमाज़	है

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	كِتٰبًا	مَّوْقُوْتًا (103)	وَلَا	تَهِنُوْا	فِى ابْتِغَآءِ
मोमिनों पर	फ़र्ज़	मुक़र्रर औक़ात में	और ना	तुम कमज़ोरी दिखाओ	तलाश में

الْقَوْمِ ط	اِنْ	تَكُوْنُوْا	تَاْلَمُوْنَ	فَاِنَّهُمْ	يَاْلَمُوْنَ	كَمَا
(दुश्मन) क़ौम की	अगर	हो तुम	तकलीफ़ उठाते	तो बेशक वो (भी)	वो तकलीफ़ उठाते हैं	जैसा कि

تَاْلَمُوْنَ ج	وَتَرْجُوْنَ	مِنَ اللّٰهِ	مَا	لَا يَرْجُوْنَ ط	وَكَانَ	اللّٰهُ
तुम तकलीफ़ उठाते हो	और तुम उम्मीद रखते हो	अल्लाह से	उसकी जो	नहीं वो उम्मीद रखते	और है	अल्लाह

عَلِيْمًا	حَكِيْمًا (104) ع	اِنَّآ	اَنْزَلْنَآ	اِلَيْكَ	الْكِتٰبَ	بِالْحَقِّ
बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	बेशक हम	नाज़िल की हमने	तरफ़ आपके	किताब	साथ हक़ के

15 ع 4 12

لِتَحْكُمَ	بَيْنَ	النَّاسِ	بِمَآ	اَرٰىكَ	اللّٰهُ ط	وَلَا	تَكُنْ
ताकि आप फ़ैसला करें	दर्मियान	लोगों के	साथ उसके जो	दिखाया आपको	अल्लाह ने	और ना	आप हों

لِّلْخَآئِنِيْنَ	خَصِيْمًا (105) لا	وَّاسْتَغْفِرِ	اللّٰهَ ط	اِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ
ख़्यानत करने वालों के लिए	झगड़ा करने वाले	और बख़्शिश मांगिए	अल्लाह से	बेशक	अल्लाह	है

غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (106) ج	وَلَا	تُجَادِلْ	عَنِ الَّذِيْنَ	يَخْتَانُوْنَ	اَنْفُسَهُمْ ط
बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला	और ना	आप झगड़ा करें	उनकी तरफ़ से जो	ख़्यानत करते हैं	अपने नफ़्सों से

اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يُحِبُّ	مَنْ	كَانَ	خَوَّانًا	اَثِيْمًا (107) ج	يَّسْتَخْفُوْنَ
बेशक	अल्लाह	नहीं पसंद करता	उसको जो	हो	बहुत ख़ाइन	बहुत गुनाहगार	वो छुप सकते हैं

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

مِنَ النَّاسِ	وَلَا	يَسْتَخْفُوْنَ	مِنَ اللّٰهِ	وَهُوَ	مَعَهُمْ	اِذْ
लोगों से	और नहीं	वो छुप सकते	अल्लाह से	और वो	उनके साथ है	जब

يُبَيِّتُوْنَ	مَا	لَا يَرْضٰى	مِنَ الْقَوْلِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	بِمَا
वो रातों को मशवरे करते हैं	जो	नहीं वो पसंद करता	बात में से	और है	अल्लाह	उसको जो

يَعْمَلُوْنَ	مُحِيْطًا (108)	هٰٓاَنْتُمْ	هٰٓؤُلَآءِ	جٰدَلْتُمْ	عَنْهُمْ
वो अमल करते हैं	घेरने वाला	ख़बरदार तुम	वो लोग हो	झगड़ा किया तुमने	उनकी तरफ़ से

فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا قف	فَمَنْ	يُّجَادِلُ	اللّٰهَ	عَنْهُمْ	يَوْمَ	الْقِيٰمَةِ
दुनिया की ज़िंदगी में	तो कौन	झगड़ा करेगा	अल्लाह से	उनके बारे में	दिन	क़यामत के

اَمْ	مَّنْ	يَّكُوْنُ	عَلَيْهِمْ	وَكِيْلًا (109)	وَمَنْ	يَّعْمَلْ	سُوْٓءًا	اَوْ
या	कौन	होगा	उन पर	कारसाज़	और जो कोई	अमल करे	बुरा	या

يَظْلِمْ	نَفْسَهٗ	ثُمَّ	يَسْتَغْفِرِ	اللّٰهَ	يَجِدِ	اللّٰهَ	غَفُوْرًا	رَّحِيْمًا (110)
वो ज़ुल्म करे	अपनी जान पर	फिर	बख़्शिश मांगे	अल्लाह से	वो पाएगा	अल्लाह को	बहुत बख़्शने वाला	निहायत रहम करने वाला

وَمَنْ	يَّكْسِبْ	اِثْمًا	فَاِنَّمَا	يَكْسِبُهٗ	عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ	وَكَانَ
और जो कोई	कमाए	कोई गुनाह	तो बेशक	वो कमाता है उसे	अपने ख़िलाफ़	और है

اللّٰهُ	عَلِيْمًا	حَكِيْمًا (111)	وَمَنْ	يَّكْسِبْ	خَطِيْٓئَةً	اَوْ	اِثْمًا
अल्लाह	बहुत इल्म वाला	बहुत हिक्मत वाला	और जो कोई	कमाए	कोई ख़ता	या	कोई गुनाह

ثُمَّ	يَرْمِ	بِهٖ	بَرِيْٓئًا	فَقَدِ	احْتَمَلَ	بُهْتَانًا	وَّاِثْمًا
फिर	वो इल्ज़ाम लगाए	साथ उसके	किसी बेगुनाह पर	पस तहक़ीक़	उसने उठाया	बोहतान	और गुनाह

16 ع 8 13

مُّبِيْنًا (112) ع	وَلَوْلَا	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكَ	وَرَحْمَتُهٗ	لَهَمَّتْ
खुल्लम-खुल्ला	और अगर ना होता	फ़ज़्ल	अल्लाह का	आप पर	और रहमत उसकी	अलबत्ता इरादा कर लिया था

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

طَّآئِفَةٌ	مِّنْهُمْ	اَنْ	يُّضِلُّوْكَ ؕ	وَمَا	يُضِلُّوْنَ	اِلَّآ	اَنْفُسَهُمْ	وَمَا
एक गिरोह ने	उनमें से	कि	वो बहका दें आपको	और नहीं	वो बहकाते	मगर	अपने आपको	और नहीं

يَضُرُّوْنَكَ	مِنْ شَيْءٍ ؕ	وَاَنْزَلَ	اللّٰهُ	عَلَيْكَ	الْكِتٰبَ	وَالْحِكْمَةَ
वो नुक़्सान दे सकते आपको	कुछ भी	और नाज़िल की	अल्लाह ने	आप पर	किताब	और हिक्मत

وَعَلَّمَكَ	مَا	لَمْ	تَكُنْ	تَعْلَمُ ؕ	وَكَانَ	فَضْلُ	اللّٰهِ	عَلَيْكَ
और सिखाया आपको	वो जो	ना	थे आप	आप जानते	और है	फ़ज़्ल	अल्लाह का	आप पर

الثلاثة

عَظِيْمًا ﴿113﴾	لَا خَيْرَ	فِيْ كَثِيْرٍ	مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ	اِلَّا	مَنْ	اَمَرَ
बहुत बड़ा	नहीं कोई भलाई	बहुत सी	उनकी सरगोशियों में	सिवाए	उसके जो	हुक्म दे

بِصَدَقَةٍ	اَوْ	مَعْرُوْفٍ	اَوْ	اِصْلَاحٍۢ	بَيْنَ	النَّاسِ ؕ	وَمَنْ	يَّفْعَلْ
सदक़े का	या	नेकी का	या	इस्लाह का	दर्मियान	लोगों के	और जो कोई	करेगा

ذٰلِكَ	ابْتِغَآءَ	مَرْضَاتِ	اللّٰهِ	فَسَوْفَ	نُؤْتِيْهِ	اَجْرًا	عَظِيْمًا ﴿114﴾
ये	चाहने को	रज़ा/रज़ामंदी	अल्लाह की	तो अनक़रीब	हम देंगे उसे	अज्र	बहुत बड़ा

وَمَنْ	يُّشَاقِقِ	الرَّسُوْلَ	مِنْۢ بَعْدِ	مَا	تَبَيَّنَ	لَهُ	الْهُدٰى
और जो कोई	मुख़ालिफ़त करे	रसूल की	बाद उसके	जो	वाज़ेह हो गई	उसके लिए	हिदायत

وَيَتَّبِعْ	غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ	نُوَلِّهٖ	مَا	تَوَلّٰى	وَنُصْلِهٖ
और वो पैरवी करे	मोमिनों के रास्ते के इलावा की	हम फेर देंगे उसे	जिधर	वो फिर गया	और हम जलाऐंगे उसे

ع 17 3 14

جَهَنَّمَ ؕ	وَسَآءَتْ	مَصِيْرًا ﴿115﴾ ع	اِنَّ	اللّٰهَ	لَا يَغْفِرُ	اَنْ	يُّشْرَكَ
जहन्नम में	और कितनी बुरी है	लौटने की जगह	बेशक	अल्लाह	नहीं बख़्शेगा	कि	शिर्क किया जाए

بِهٖ	وَيَغْفِرُ	مَا	دُوْنَ	ذٰلِكَ	لِمَنْ	يَّشَآءُ ؕ	وَمَنْ	يُّشْرِكْ
साथ उसके	और वो बख़्श देगा	जो	इलावा हो	इसके	जिसके लिए	वो चाहेगा	और जो कोई	शिर्क करेगा

© AL FURQAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وقف لازم

مِنْ دُوْنِهٖٓ	يَّدْعُوْنَ	اِنْ	بَعِيْدًا ﴿116﴾	ضَلٰلًاۢ	ضَلَّ	فَقَدْ	بِاللّٰهِ
उसके सिवा	वो पुकारते	नहीं	बहुत दूर का	भटकना	वो भटक गया	तो तहक़ीक़	साथ अल्लाह के

لَّعَنَهُ	مَّرِيْدًا ﴿117﴾ لا	شَيْطٰنًا	اِلَّا	يَّدْعُوْنَ	وَاِنْ	اِنٰثًا ج	اِلَّآ
लानत की उस पर	सरकश को	शैतान	मगर	वो पुकारते	और नहीं	औरतों/देवियों को	मगर

مَّفْرُوْضًا ﴿118﴾ لا	نَصِيْبًا	مِنْ عِبَادِكَ	لَاَتَّخِذَنَّ	وَقَالَ	اللّٰهُ م
मुक़र्रर	एक हिस्सा	तेरे बंदों में से	अलबत्ता मैं ज़रूर लेकर रहूंगा	और कहा उसने	अल्लाह ने

فَلَيُبَتِّكُنَّ	وَلَاٰمُرَنَّهُمْ	وَّلَاُمَنِّيَنَّهُمْ	وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ
फिर अलबत्ता वो ज़रूर काटेंगे	और अलबत्ता मैं ज़रूर हुक्म दूंगा उन्हें	और अलबत्ता मैं ज़रूर उम्मीदें दिलाऊंगा उन्हें	अलबत्ता मैं ज़रूर भटकाऊंगा उन्हें

وَمَنْ	اللّٰهِ ط	خَلْقَ	فَلَيُغَيِّرُنَّ	وَلَاٰمُرَنَّهُمْ	الْاَنْعَامِ	اٰذَانَ
और जो कोई	अल्लाह की	तख़लीक़	पस अलबत्ता वो ज़रूर बदल देंगे	और अलबत्ता मैं ज़रूर हुक्म दूंगा उन्हें	मवेशियों के	कान

خُسْرَانًا	خَسِرَ	فَقَدْ	اللّٰهِ	مِّنْ دُوْنِ	وَلِيًّا	الشَّيْطٰنَ	يَّتَّخِذِ
नुक़्सान उठाना	उसने नुक़्सान उठाया	तो तहक़ीक़	अल्लाह के	सिवाए	दोस्त	शैतान को	बनाएगा

اِلَّا	الشَّيْطٰنُ	يَعِدُهُمُ	وَمَا	وَيُمَنِّيْهِمْ ط	يَعِدُهُمْ	مُّبِيْنًا ﴿119﴾ ط
मगर	शैतान	वादा करता उनसे	और नहीं	और उम्मीदें दिलाता है उन्हें	वो वादा करता है उनसे	खुल्लम-खुल्ला

مَحِيْصًا ﴿121﴾	عَنْهَا	يَجِدُوْنَ	وَلَا	جَهَنَّمُ ز	مَاْوٰىهُمْ	اُولٰٓئِكَ	غُرُوْرًا ﴿120﴾
कोई जाए पनाह	उससे	वो पाएंगे	और नहीं	जहन्नम है	ठिकाना उनका	यही लोग हैं	धोखे का

تَجْرِيْ	جَنّٰتٍ	سَنُدْخِلُهُمْ	الصّٰلِحٰتِ	وَعَمِلُوا	اٰمَنُوْا	وَالَّذِيْنَ
बहती हैं	बाग़ात में	अनक़रीब हम दाख़िल करेंगे उन्हें	नेक	और अमल किए	ईमान लाए	और वो जो

حَقًّا ط	اللّٰهِ	وَعْدَ	اَبَدًا ط	فِيْهَآ	خٰلِدِيْنَ	الْاَنْهٰرُ	مِنْ تَحْتِهَا
सच्चा	अल्लाह का	वादा है	अबद तक/ हमेशा-हमेशा	उनमें	हमेशा रहने वाले हैं	नहरें	उनके नीचे से

AL-HIDAYA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَمَنْ	اَصْدَقُ	مِنَ اللّٰهِ	قِيْلًا ﴿122﴾	لَيْسَ	بِاَمَانِيِّكُمْ	وَلَآ	اَمَانِيِّ
और कौन	ज़्यादा सच्चा है	अल्लाह से	बात में	नहीं है	तुम्हारी आरज़ुओं पर	और ना	आरज़ुओं पर

اَهْلِ الْكِتٰبِ ؕ	مَنْ	يَّعْمَلْ	سُوْٓءًا	يُّجْزَ	بِهٖ ۙ	وَلَا	يَجِدْ
अहले किताब की	जो कोई	अमल करेगा	बुरा	वो बदला दिया जाएगा	उसका	और ना	वो पाएगा

لَهٗ	مِنْ دُوْنِ	اللّٰهِ	وَلِيًّا	وَّلَا	نَصِيْرًا ﴿123﴾	وَمَنْ	يَّعْمَلْ
अपने लिए	सिवाय	अल्लाह के	कोई दोस्त	और ना	कोई मददगार	और जो कोई	अमल करे

مِنَ الصّٰلِحٰتِ	مِنْ ذَكَرٍ	اَوْ	اُنْثٰى	وَهُوَ	مُؤْمِنٌ	فَاُولٰٓئِكَ	يَدْخُلُوْنَ
नेक	मर्द हो	या	औरत	जबकि वो	मोमिन हो	तो यही लोग	दाख़िल होंगे

الْجَنَّةَ	وَلَا	يُظْلَمُوْنَ	نَقِيْرًا ﴿124﴾	وَمَنْ	اَحْسَنُ	دِيْنًا	مِّمَّنْ
जन्नत में	और ना	वो ज़ुल्म किये जाऐंगे	खजूर की गुठली में सुराख़ बराबर	और कौन	ज़्यादा अच्छा है	दीन में	उससे जो

اَسْلَمَ	وَجْهَهٗ	لِلّٰهِ	وَهُوَ	مُحْسِنٌ	وَّاتَّبَعَ	مِلَّةَ	اِبْرٰهِيْمَ	حَنِيْفًا ؕ
सुपुर्द कर दे	चेहरा अपना	अल्लाह के लिए	और वो	नेकोकार हो	और वो पैरवी करे	मिल्लते	इब्राहीम की	जो यकसू था

وَاتَّخَذَ	اللّٰهُ	اِبْرٰهِيْمَ	خَلِيْلًا ﴿125﴾	وَلِلّٰهِ	مَا	فِي السَّمٰوٰتِ	وَمَا
और बना लिया	अल्लाह ने	इब्राहीम को	ख़ास दोस्त	और अल्लाह ही के लिए है	जो कुछ	आसमानों में है	और जो कुछ

18 ع 11 15

فِي الْاَرْضِ ؕ	وَكَانَ	اللّٰهُ	بِكُلِّ	شَيْءٍ	مُّحِيْطًا ﴿126﴾ ع	وَيَسْتَفْتُوْنَكَ
ज़मीन में है	और है	अल्लाह	हर	चीज़ को	घेरने वाला	और वो फ़तवा मांगते हैं आपसे

فِي النِّسَآءِ ؕ	قُلِ	اللّٰهُ	يُفْتِيْكُمْ	فِيْهِنَّ ۙ	وَمَا	يُتْلٰى
औरतों के बारे में	कह दीजिए	अल्लाह	फ़तवा देता है तुम्हें	उनके मामले में	और जो	पढ़ा जाता है

عَلَيْكُمْ	فِي الْكِتٰبِ	فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ	الّٰتِيْ	لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ	مَا
तुम पर	किताब में	यतीम लड़कियों के बारे में	वो जो	नहीं तुम देते उन्हें	जो

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ	تَنْكِحُوْهُنَّ	اَنْ	وَتَرْغَبُوْنَ	لَهُنَّ	كُتِبَ
और कमज़ोरों (के बारे में)	तुम निकाह कर लो उनसे	कि	और तुम रग़बत रखते हो	उनके लिए	लिखा गया

تَفْعَلُوْا	وَمَا	بِالْقِسْطِ ؕ	لِلْيَتٰمٰى	تَقُوْمُوْا	وَاَنْ	مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ
तुम करोगे	और जो भी	इंसाफ़ पर	यतीमों के लिए	तुम क़ायम रहो	और ये कि	बच्चों में से

خَافَتْ	امْرَاَةٌ	وَاِنِ	عَلِيْمًا (127)	بِهٖ	كَانَ	اللّٰهَ	فَاِنَّ	مِنْ خَيْرٍ
डरे	कोई औरत	और अगर	ख़ूब जानने वाला	उसे	है	अल्लाह	तो बेशक	नेकी में से

اَنْ	عَلَيْهِمَآ	جُنَاحَ	فَلَا	اِعْرَاضًا	اَوْ	نُشُوْزًا	مِنْۢ بَعْلِهَا
कि	उन दोनों पर	कोई गुनाह	तो नहीं	बेरुख़ी से	या	ज़्यादती करने से	अपने शौहर से

الْاَنْفُسُ	وَاُحْضِرَتِ	خَيْرٌ ؕ	وَالصُّلْحُ	صُلْحًا ؕ	بَيْنَهُمَا	يُّصْلِحَا
नफ़्सों में	और रख दी गई	बेहतर है	और सुलह करना	सुलह करना	आपस में	वो दोनों सुलह कर लें

بِمَا	كَانَ	اللّٰهَ	فَاِنَّ	وَتَتَّقُوْا	تُحْسِنُوْا	وَاِنْ	الشُّحَّ ؕ
साथ उसके जो	है	अल्लाह	तो बेशक	और तुम तक़वा करो	तुम एहसान करो	और अगर	बख़ीली

النِّسَآءِ	بَيْنَ	تَعْدِلُوْا	اَنْ	تَسْتَطِيْعُوْٓا	وَلَنْ	خَبِيْرًا (128)	تَعْمَلُوْنَ
बीवियों के	दर्मियान	तुम अदल करो	कि	तुम इस्तिताअत रख सकते	और हरगिज़ नहीं	ख़ूब ख़बर रखने वाला	तुम अमल करते हो

كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ	فَتَذَرُوْهَا	الْمَيْلِ	كُلَّ	تَمِيْلُوْا	فَلَا	حَرَصْتُمْ	وَلَوْ
मानिंद लटकती हुई (शै) के	कि तुम छोड़ दो	माइल हो जाना	मुकम्मल	तुम माइल हो जाओ	तो ना	तुम हिर्स करो	और अगरचे

رَّحِيْمًا (129)	غَفُوْرًا	كَانَ	اللّٰهَ	فَاِنَّ	وَتَتَّقُوْا	تُصْلِحُوْا	وَاِنْ
निहायत रहम करने वाला	बहुत बख़्शने वाला	है	अल्लाह	तो बेशक	और तुम तक़वा करो	तुम इस्लाह/ सुलह करो	और अगर

وَاسِعًا	اللّٰهُ	وَكَانَ	مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ	كُلًّا	اللّٰهُ	يُغْنِ	يَّتَفَرَّقَا	وَاِنْ
वुसअत वाला	अल्लाह	और है	अपनी वुसअत से	हर एक को	अल्लाह	ग़नी कर देगा	वो दोनों अलग हो जाएं	और अगर

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَلَقَدْ	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَمَا	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	وَلِلّٰهِ	حَكِيْمًا ﴿130﴾
और अल्बत्ता तहक़ीक़	ज़मीन में है	और जो कुछ	आसमानों में है	जो कुछ	और अल्लाह ही के लिए है	बहुत हिक्मत वाला

اَنِ	وَاِيَّاكُمْ	مِنْ قَبْلِكُمْ	الْكِتٰبَ	اُوْتُوا	الَّذِيْنَ	وَصَّيْنَا
कि	और तुम्हें भी	तुमसे पहले	किताब	दिए गए	उन्हें जो	ताकीद की हमने

وَمَا	فِي السَّمٰوٰتِ	مَا	لِلّٰهِ	فَاِنَّ	تَكْفُرُوْا	وَاِنْ	اللّٰهَ ؕ	اتَّقُوا
और जो कुछ	आसमानों में है	जो कुछ	अल्लाह ही के लिए है	तो बेशक	तुम कुफ़्र करोगे	और अगर	अल्लाह से	डरो

مَا	وَلِلّٰهِ	حَمِيْدًا ﴿131﴾	غَنِيًّا	اللّٰهُ	وَكَانَ	فِي الْاَرْضِ ؕ
जो कुछ	और अल्लाह ही के लिए है	बहुत तारीफ़ वाला	बहुत बेनियाज़	अल्लाह	और है	ज़मीन में है

يَّشَاْ	اِنْ	وَكِيْلًا ﴿132﴾	بِاللّٰهِ	وَكَفٰى	فِي الْاَرْضِ ؕ	وَمَا	فِي السَّمٰوٰتِ
वो चाहे	अगर	कारसाज़	अल्लाह	और काफ़ी है	ज़मीन में है	और जो कुछ	आसमानों में है

عَلٰى	اللّٰهُ	وَكَانَ	بِاٰخَرِيْنَ ؕ	وَيَاْتِ	النَّاسُ	اَيُّهَا	يُذْهِبْكُمْ
ऊपर	अल्लाह	और है	दूसरों को	और वो ले आए	लोगो	ऐ	वो ले जाए तुम्हें

اللّٰهِ	فَعِنْدَ	الدُّنْيَا	ثَوَابَ	يُرِيْدُ	كَانَ	مَنْ	قَدِيْرًا ﴿133﴾	ذٰلِكَ
अल्लाह के	तो पास है	दुनिया का	सवाब	चाहता	है	जो कोई	बहुत क़ुदरत रखने वाला	इसके

بَصِيْرًا ﴿134﴾ ع	سَمِيْعًا	اللّٰهُ	وَكَانَ	وَالْاٰخِرَةِ ؕ	الدُّنْيَا	ثَوَابُ	19 ع 8 16
बहुत देखने वाला	बहुत सुनने वाला	अल्लाह	और है	और आख़िरत का	दुनिया का	सवाब	

لِلّٰهِ	شُهَدَآءَ	بِالْقِسْطِ	قَوّٰمِيْنَ	كُوْنُوْا	اٰمَنُوْا	يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ
अल्लाह के लिए	गवाही देने वाले	इंसाफ़ पर	क़ायम रहने वाले	हो जाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो

غَنِيًّا	يَّكُنْ	اِنْ	وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ	اَوِ الْوَالِدَيْنِ	عَلٰۤى اَنْفُسِكُمْ	وَلَوْ
ग़नी	वो होंगे	अगर	और क़राबत दारों के	या वालिदैन के	ख़िलाफ़ हो तुम्हारे अपने	और अगरचे

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

اَوْ	فَقِيْرًا	فَاللّٰهُ	اَوْلٰى	بِهِمَا ۖ قف	فَلَا	تَتَّبِعُوا	الْهَوٰٓى	اَنْ
या	फ़क़ीर	तो अल्लाह	ज़्यादा ख़ैरख़्वाह है	उन दोनों का	तो ना	तुम पैरवी करो	ख़्वाहिशात की	कि

تَعْدِلُوْا ۚ ج	وَاِنْ	تَلْوٗٓا	اَوْ	تُعْرِضُوْا	فَاِنَّ	اللّٰهَ	كَانَ	بِمَا
(ना) तुम अदल करो	और अगर	तुम मौड़ दोगे (ज़बान)	या	तुम ऐराज़ करोगे	तो बेशक	अल्लाह	है	उसकी जो

تَعْمَلُوْنَ	خَبِيْرًا (135)	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْٓا	اٰمِنُوْا	بِاللّٰهِ	وَرَسُوْلِهٖ
तुम अमल करते हो	ख़ूब ख़बर रखने वाला	ऐ लोगो जो	ईमान लाए हो	ईमान ले आओ	अल्लाह पर	और उसके रसूल पर

وَالْكِتٰبِ	الَّذِىْ	نَزَّلَ	عَلٰى رَسُوْلِهٖ	وَالْكِتٰبِ	الَّذِىْٓ	اَنْزَلَ
और इस किताब पर	जो	उसने नाज़िल की	अपने रसूल पर	और वो किताब	जो	उसने नाज़िल की

مِنْ قَبْلُ ۗ ط	وَمَنْ	يَّكْفُرْ	بِاللّٰهِ	وَمَلٰٓئِكَتِهٖ	وَكُتُبِهٖ
इस से पहले	और जो कोई	कुफ़्र करे	अल्लाह का	और उसके फ़रिश्तों का	और उसकी किताबों का

وَرُسُلِهٖ	وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ	فَقَدْ	ضَلَّ	ضَلٰلًاۢ	بَعِيْدًا (136)	اِنَّ
और उसके रसूलों का	और आख़िरी दिन का	पस तहक़ीक	वो भटक गया	भटक जाना	बहुत दूर का	बेशक

الَّذِيْنَ	اٰمَنُوْا	ثُمَّ	كَفَرُوْا	ثُمَّ	اٰمَنُوْا	ثُمَّ	كَفَرُوْا	ثُمَّ
वो लोग जो	ईमान लाए	फिर	उन्होंने कुफ़्र किया	फिर	वो ईमान लाए	फिर	उन्होंने कुफ़्र किया	फिर

ازْدَادُوْا	كُفْرًا	لَّمْ	يَكُنِ	اللّٰهُ	لِيَغْفِرَ	لَهُمْ	وَلَا	لِيَهْدِيَهُمْ
वो बढ़ गए	कुफ़्र में	नहीं	है	अल्लाह	कि वो बख़्श दे	उन्हें	और ना	ये कि हिदायत दे उन्हें

سَبِيْلًا ؕ ط (137)	بَشِّرِ	الْمُنٰفِقِيْنَ	بِاَنَّ	لَهُمْ	عَذَابًا	اَلِيْمًا ۙ لا (138)
रास्ते की	ख़ुश-ख़बरी दे दीजिए	मुनाफ़िक़ों को	कि बेशक	उनके लिए	अज़ाब है	दर्दनाक

الَّذِيْنَ	يَتَّخِذُوْنَ	الْكٰفِرِيْنَ	اَوْلِيَآءَ	مِنْ دُوْنِ	الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ ط
वो जो	बना लेते हैं	काफ़िरों को	दोस्त	सिवाए	मोमिनों के

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

وَقَدْ	جَمِيْعًا ط (139)	لِلّٰهِ	الْعِزَّةَ	فَاِنَّ	الْعِزَّةَ	عِنْدَهُمُ	اَيَبْتَغُوْنَ
हालांकि तहक़ीक़	सारी की सारी	अल्लाह ही के लिए है	इज़्ज़त	तो बेशक	इज़्ज़त	पास उनके	क्या वो चाहते हैं

يُكْفَرُ	اٰيٰتِ اللّٰهِ	سَمِعْتُمْ	اِذَا	اَنْ	فِی الْكِتٰبِ	عَلَيْكُمْ	نَزَّلَ
कुफ़्र किया जाता है	अल्लाह की आयात को	सुनो तुम	जब	कि	किताब में	तुम पर	उसने नाज़िल किया

يَخُوْضُوْا	حَتّٰى	مَعَهُمْ	تَقْعُدُوْا	فَلَا	بِهَا	وَيُسْتَهْزَاُ	بِهَا
वो मशग़ूल हो जाएँ	यहां तक कि	साथ उनके	तुम बैठो	तो ना	उनका	और मज़ाक़ उड़ाया जाता है	उनका

جَامِعُ	اللّٰهَ	اِنَّ	مِّثْلُهُمْ ط	اِذًا	اِنَّكُمْ	غَيْرِهٖٓ صلے	فِیْ حَدِيْثٍ
जमा करने वाला है	अल्लाह	बेशक	उन जैसे (होगे)	तब	(वरना) बेशक तुम	इलावा उसके	किसी बात में

يَتَرَبَّصُوْنَ	الَّذِيْنَ	جَمِيْعَا ۨ لا (140)	فِیْ جَهَنَّمَ	وَالْكٰفِرِيْنَ	الْمُنٰفِقِيْنَ
इंतिज़ार कर रहे हैं	वो लोग जो	सब के सब को	जहन्नम में	और काफ़िरों को	मुनाफ़िक़ों को

نَكُنْ	اَلَمْ	قَالُوْٓا	مِّنَ اللّٰهِ	فَتْحٌ	لَكُمْ	كَانَ	فَاِنْ	بِكُمْ ج
थे हम	क्या नहीं	वो कहते हैं	अल्लाह की तरफ़ से	कोई फ़तह	तुम्हारे लिए	हो	फिर अगर	तुम्हारे बारे में

اَلَمْ	قَالُوْٓا	نَصِيْبٌ لا	لِلْكٰفِرِيْنَ	كَانَ	وَاِنْ	مَّعَكُمْ صلے
क्या नहीं	वो कहते हैं	कोई हिस्सा	काफ़िरों के लिए	हो	और अगर	साथ तुम्हारे

يَحْكُمُ	فَاللّٰهُ	مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ط	وَنَمْنَعْكُمْ	عَلَيْكُمْ	نَسْتَحْوِذْ
फ़ैसला करेगा	पस अल्लाह	मोमिनों से	और हम बचा रहे थे तुम्हें	तुम पर	हम ग़ालिब आने लगे थे

عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ	لِلْكٰفِرِيْنَ	اللّٰهُ	يَّجْعَلَ	وَلَنْ	يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط	بَيْنَكُمْ
मोमिनों पर	काफ़िरों के लिए	अल्लाह	बनाएगा	और हरगिज़ नहीं	दिन क़यामत के	दर्मियान तुम्हारे

خَادِعُهُمْ ج	وَهُوَ	اللّٰهَ	يُخٰدِعُوْنَ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اِنَّ	سَبِيْلًا ع (141)
धोखा देने वाला है उन्हें	हालांकि वो	अल्लाह को	वो धोखा देते हैं	मुनाफ़िक़ीन	बेशक	कोई रास्ता

ع 20 7 17

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

النَّاسَ	يُرَآءُوْنَ	كُسَالٰى ۙ	قَامُوْا	اِلَى الصَّلٰوةِ	قَامُوْٓا	وَاِذَا
लोगों को	वो दिखावा करते हैं	इंतिहाई सुस्ती से	वो खड़े होते हैं	तरफ़ नमाज़ के	वो खड़े होते हैं	और जब

ذٰلِكَ ۖۗ	بَيْنَ	مُّذَبْذَبِيْنَ	قَلِيْلًا ۙ (142)	اِلَّا	اللّٰهَ	يَذْكُرُوْنَ	وَلَا
इसके	दर्मियान	मुतज़बज़ब हैं	बहुत थोड़ा	मगर	अल्लाह को	वो याद करते	और नहीं

اللّٰهُ	يُّضْلِلِ	وَمَنْ	هٰٓؤُلَآءِ ۭ	اِلٰى	وَلَآ	هٰٓؤُلَآءِ	اِلٰى	لَآ
अल्लाह	भटका दे	और जिसे	उन लोगों के	तरफ़	और ना	इन लोगों के	तरफ़	ना

لَا تَتَّخِذُوا	اٰمَنُوْا	يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ	سَبِيْلًا (143)	لَهٗ	تَجِدَ	فَلَنْ
ना तुम बनाओ	ईमान लाए हो	ऐ लोगो जो	कोई रास्ता	उसके लिए	आप पाएंगे	तो हरगिज़ नहीं

تَجْعَلُوْا	اَنْ	اَتُرِيْدُوْنَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ	مِنْ دُوْنِ	اَوْلِيَآءَ	الْكٰفِرِيْنَ
तुम बनाओ	कि	क्या तुम चाहते हो	मोमिनों के	सिवाए	दोस्त	काफ़िरों को

فِي الدَّرْكِ	الْمُنٰفِقِيْنَ	اِنَّ	مُّبِيْنًا (144)	سُلْطٰنًا	عَلَيْكُمْ	لِلّٰهِ
दर्जे में होंगे	मुनाफ़िक़ीन	बेशक	वाज़ेह	कोई दलील	अपने ख़िलाफ़	अल्लाह के लिए

اِلَّا	نَصِيْرًا ۙ (145)	لَهُمْ	تَجِدَ	وَلَنْ	مِنَ النَّارِ ۚ	الْاَسْفَلِ
मगर	कोई मददगार	उनके लिए	आप पाएंगे	और हरगिज़ नहीं	आग के	सबसे निचले

دِيْنَهُمْ	وَاَخْلَصُوْا	بِاللّٰهِ	وَاعْتَصَمُوْا	وَاَصْلَحُوْا	تَابُوْا	الَّذِيْنَ
अपने दीन को	और ख़ालिस कर लिया	अल्लाह को	और मज़बूती से थाम लिया	और इस्लाह कर ली	तौबा की	वो जिन्होंने

اللّٰهُ	يُؤْتِ	وَسَوْفَ	الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ	مَعَ	فَاُولٰۗىِٕكَ	لِلّٰهِ
अल्लाह	देगा	और अनक़रीब	मोमिनों के	साथ	तो यही लोग हैं	अल्लाह के लिए

بِعَذَابِكُمْ	اللّٰهُ	يَفْعَلُ	مَا	عَظِيْمًا (146)	اَجْرًا	الْمُؤْمِنِيْنَ
तुम्हें अज़ाब देकर	अल्लाह	करेगा	क्या	बहुत बड़ा	अज्र	मोमिनों को

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

عَلِيْمًا (147)	شَاكِرًا	اللّٰهُ	وَكَانَ	وَاٰمَنْتُمْ ؕ	شَكَرْتُمْ	اِنْ
बहुत इल्म वाला	क़दरदान	अल्लाह	और है	और ईमान ले आओ तुम	शुक्र करो तुम	अगर

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION